04 - नए साल और नए बजट से बंधी बुजुर्गों की उम्मीदें

05 - किताबें खूब छप रही हैं लेकिन पढ़ने वाले हैं नहीं

06 - जुआ-सट्टा सहित अवैध गतिविधियों की रोकथाम के लिए पुलिस का अभियान...

07 - अटलजी ने सशक्त और समर्थ भारत के निर्माण का स्वप्न देखा था, आज...

A Daily News Magazine

इंदौर

गुरुवार, 26 दिसंबर, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 87, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

स्थायी पर्यटन की ओर बढ़ता भारत, ये हैं नई चुनौतियां

अदिति रावत

कूड़े का प्रबंधन, जल संरक्षण, गोवा और हिमालय जैसे स्थनों पर पर्यटकों की बहुत अधिक भीड़- ये सभी पहलू स्थायी विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। दुनिया भर में पर्यटन आर्थिक विकास और रोजगार के अवसर उत्पन्न करने वाला मुख्य सेक्टर है, जो भारत की समृद्ध संस्कृति एवं प्राकृतिक धरोहर को बढ़ावा देते हुए आजीविका के अवसर उत्पन्न करता है।

वर्ल्ड ट्रैवल एंड टूरिज्म काउंसिल के अनुसार, 2024 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में पर्यटन का योगदान 6.8 फीसदी यानि 256.1 अरब डॉलर था। इसी तरह दुनिया की बात करें तो 2023 में दुनिया के जीडीपी में इस सेक्टर का योगदान 10 फीसदी यानि 104 खरब डॉलर रहा। यह उद्योग भारत में 4.54 करोड़ लोगों को नौकरियां प्रदान करता है, जो भारतीय कार्यबल का 9.2 फीसदी हिस्सा बनाते हैं।

दुनिया भर में पर्यटन सेक्टर 34.8 करोड़ लोगों को रोजगार देता है, यह आंकड़ा कुल कार्यबल का 10.4 फीसदी है। केंद्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार 2019 में 1.09 करोड़ विदेशी पर्यटक भारत पहुंचे, जिन्होंने भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 30 अरब डॉलर का योगदान दिया। हालांकि बड़े पैमाने पर पर्यटन के इस विकास के बीच पर्यावरण को बहुत अधिक नुकसान पहुंचा है, जो जैव विविधता और संस्कृति के लिए संकट का कारण बन गया है। इस बीच पर्यटन के चलते नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए स्थायी पर्यटन की अवधारणा ज़ोर पकड़ रही है। केप टाउन डेक्लेरेशन (2002) और मैग्ना कार्टा लंदन (2020) के अनुसार स्थायी पर्यटन ज़िम्मेदाराना यात्रा को बढ़ावा देता है, जो धरती और लोगों दोनों के लिए फायदेमंद है। स्थायी पर्यटन के कारण पर्यावरण और संस्कृति को कम नुकसान पहुंचता है, स्थानीय अर्थव्यवस्था तथा सामुदायिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

भारत ने भी विभिन्न पहलों के माध्यम से इन विश्व स्तरीय लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं, जैसे 'स्वदेश दर्शन' जो पर्यावरण के अनुकूल टूरिस्ट सर्किट विकसित करता है, 'प्रसाद' जो तीर्थस्थलों के स्थायी विकास पर ध्यान केन्द्रित करता है तथा 'अतुल्य भारत हरित पहल' जो स्थानीय समुदायों को समर्थन प्रदान करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल यात्रा को बढ़ावा देती है।

इन सब प्रयासों के बावजूद कई तरह की चुनौतियां हैं, खासतौर पर दूर-दराज के इलाकों में, जो प्रगति में रूकावट बन जाती हैं। जैसे कूड़े का प्रबंधन ठीक से न होना, जल संरक्षण, गोवा और हिमालय जैसे स्थनों पर पर्यटकों की बहुत अधिक भीड़- ये सभी पहलु स्थायी विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।

इसके अलावा पर्यावरण संरक्षण के लिए उचित नियमों की कमी, बाहरी लोगों और कंपनियों को आर्थिक फायदा मिलना, छोटे कारोबारों के लिए सीमित फंडिंग और समुदाय की ओर से सहयोग की कमी भी इस दृष्टि से बड़ी रूकावटें हैं। इन चुनौतियों को हल कर स्थायी पर्यटन की पूर्ण क्षमता का लाभ उठाने के लिए भारत को बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाना होगा।

समुदाय की भागीदारी और स्थानीय स्वामित्व जैसी अवधारणाएं इन समस्याओं को हल करने में कारगर हो सकती हैं। जब पर्यटन में समुदाय की हिस्सेदारी होती है, तो इसके प्रति ज़िम्मेदारी की भावना खुद-ब-खुद उत्पन्न हो जाती है। समुदाय अपनी संस्कृति और प्राकृतिक संपदा को सुरक्षित रखने में सबसे अच्छी भूमिका निभा सकते हैं। वे अपने स्थानीय संसाधनों को सुरक्षित रखते हुए पर्यटन को बढ़ावा देते हैं, ताकि क्षेत्र को नुकसान न पहुंचे। इस तरह स्थानीय समुदायों की भागीदारी से लोगों और पर्यावरण दोनों को फायदा मिलता है।

इस तरह का दृष्टिकोण जापान और स्विट्ज़रलैण्ड सहित कई देशों में सफल साबित हुआ है, जहां 'डेस्टिनेशन मैनेजमेन्ट ऑर्गेनाइजेशन ' स्थानीय समुदायों को पर्यटन के संसाधनों के प्रबंधन में सक्षम बनाते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि पर्यटन सेक्टर स्थानीय परम्पराओं, संस्कृति एवं पर्यावरणी क्षमता के बीच तालमेल बनाए रखते हुए विकसित होता रहे। भारत भी इसी तरह के मॉडल्स अपना सकता है, और सभी हितधारकों के लिए पर्यटन के फायदे को सुनिश्चित कर सकता है।

आर्थिक फायदों के दायरे से बढ़कर देखें तो स्थानीय लोगों की भागीदारी पर्यटन के अनुभव को बेहतर बनाती है। इसका उदाहरण हैं गुजरात में होडका और तेलंगाना में पोचमपल्ली, जहां स्थानीय समुदायों ने पर्यटन पर नियंत्रण रखा और अपनी पारम्परिक कारीगरी एवं जीवनशैली को बनाए रखते हुए आगंतुकों को उत्कृष्ट अनुभव प्रदान किया है। इससे न सिर्फ स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिला बल्कि संस्कृति को सुरक्षित रखने में भी मदद मिली।

पर्यटन के अनुभव को बेहतर बनाकर और भीड़ प्रबन्धन की योजनाओं को लागू कर पर्यटन की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है। सख्त दृष्टिकोण के बजाए आसानी से स्वीकार किया जा सकने वाला प्रत्यास्थ मॉडल इस दृष्टि से अधिक उपयोगी है। इसमें पर्यटन को लेकर स्थानीय लोगों की समझ और स्वीकार्यता को ध्यान में रखते हुए सुनिश्चित किया जाता है कि वे स्थानीय पर्यटन को आकार देने में मुख्य निर्णय-निर्माता की भूमिका निभाएं।

इसके अलावा समुदाय की भागीदारी बढ़ाने से बुनियादी स्तर पर स्थायी प्रथाओं को शामिल करना आसान हो जाता है। सिक्किम का ज़ीरो-वेस्ट टूरिज़्म मॉडल इस बात का उदाहरण है कि कैसे समुदाय स्थायित्व (सस्टेनेबिलिटी) में योगदान दे सकते हैं। इसी तरह केरल का रिस्पॉन्सिबल टूरिज़्म मिशन भी समुदायिक पहलों जैसे पैपर एण्ड स्ट्रीट के माध्यम से सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखते हुए रोज़गार उत्पन्न करने की क्षमता को दर्शाता है। ये सभी प्रयास पर्यटन में बदलाव लाने और स्थायित्व को बढ़ावा देने में समुदाय की भागीदारी के महत्व को दर्शाते हैं।

हाल में 11 दिसंबर को मनाये गए, अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस की थीम 'माउन्टेन सोलयुशन्स फॉर सस्टेनेबल फ्यूचर' स्थायी पर्यटन की आवश्यकता पर ज़ोर देती है। जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस कहते हैं 'स्थायी पर्यटन समुदायों में बदलाव लाने-नौकरियां उत्पन्न करने, समावेशन को बढ़ावा देने तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने की क्षमता रखता है। संस्कृति एवं प्राकृतिक धरोहर को सुरक्षित रखकर यह तनाव को कम करने और सद्भावना को बढ़ाने में योगदान देता है।'' यह दृष्टिकोण बताता है कि किस तरह स्थायी पर्यटन आर्थिक फायदों के दायरे से बढ़कर समुदाय में शांति एवं सद्भाव को प्रोत्साहित कर सकता है।

भारत का पर्यटन सेक्टर तेजी से विकसित हो रहा है, ऐसे में स्थायी प्रथाओं पर ध्यान देकर हम सुनिश्चित कर सकते हैं कि पर्यटन, संसाधनों को कम करने के बजाए, उन्हें बढ़ाने और संरक्षित रखने में योगदान दे। इस दिशा में समुदाय की भागीदारी कारगर हो सकती है और पर्यटन में स्थायित्व को बढ़ावा दे सकती है। समुदाय-आधारित स्वीकार्यता दृष्टिकोण भारत के आर्थिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणी स्थायित्व के लक्ष्यों को हासिल करने में और भारत की अखंडता को बनाए रखने में उपयोगी होगा।

(डाउन टू अर्थ हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रभात

मैं कोई मुल्क नहीं हूँ कि जला दोगे मुझे
कोई दीवार नहीं हूँ कि गिरा दोगे मुझे
कोई सरहद भी नहीं कि मिटा दोगे मुझे
यह जो दुनिया का पुराना नक्शा
मेज़ पर तुमने बिछा रक्खा है
इसमें कावाक लकीरों के सिवा कुछ भी नहीं
तुम मुझे इसमें कहाँ ढूंढते हो
मैं इक अरमान हूँ दीवानों का
सख्त-जाँ ख्वाब हूँ कुचले हुए इंसानों का
लूट जब हद से सिवा होती है
जुल्म जब हद से गुजर जाता है
मैं अचानक किसी कोने में नज़र आता हूँ
किसी सीने से उभर आता हूँ
आज से पहले भी तुमने मुझे देखा होगा
कभी मशरिक में कभी मगरिब में
कभी शहरों में कभी गाँव में
कभी बस्ती में कभी जंगल में
मेरी तारीख ही तारीख है,
जुगराफिया कोई भी नहीं
और तारीख भी ऐसी
जो पढ़ाई तो नहीं जा सकती
लोग छुप-छुप के पढ़ा करते हैं
कि मैं गालिब कभी मगलूब हुआ
कातिलों को कभी सूली पे चढ़ाया मैंने
और कभी आप ही मसलूब हुआ
फर्क इतना है कि
कातिल मेरे मर जाते हैं
मैं न मरता हूँ न मर सकता हूं।

- कैफ़ी आज़मी

पीएम मोदी ने अटल जी की 100वीं जयंती पर देश की पहली केन-बेतवा राष्ट्रीय परियोजना का किया शिलान्यास

राष्ट्रीय परियोजना से पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र में खुलेंगे समृद्धि और खुशहाली के नये द्वार : प्रधानमंत्री

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि पिछले 1 वर्ष में मध्यप्रदेश में विकास कार्यों को नई गति मिली है। आज मध्यप्रदेश में हजारों करोड़ की विकास परियोजनाओं की शुरुआत हुई है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल

बिहारी वाजपेई के सपने को साकार करती हुई देश की पहली नदी जोड़ी परियोजना केन-बेतवा का आज यहाँ शिलान्यास हुआ है। इसके साथ ही देश के पहले फ्लोटिंग सोलर पॉवर प्रोजेक्ट, ओंकारेश्वर का भी शिलान्यास हुआ है। इसके लिए मध्यप्रदेश के 'कर्मठ मुख्यमंत्री' डॉ. मोहन यादव की सरकार और यहां की जनता को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने संबोधन की शुरूआत बुंदेलखंडी बोली में करते हुए कहा, 'वीरों की धरती ई बुंदेलखंड पे रहबे बारे सबई जनन खों हमाई तरफ से हाथ जोड़के राम-राम पौंचे'। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि देश के विकास में अटल जी का योगदान सदैव याद रखा जाएगा। वे सुशासन के प्रतीक थे। आज उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर उनकी स्मृति में मध्यप्रदेश में 1153 अटल ग्राम सेवा सदन का निर्माण प्रारंभ हो रहा है, जिसकी पहली किश्त भी जारी की गई है। सुशासन हमारी सरकार की पहचान है। हमारे लिए जनहित, जनकल्याण और विकास सर्वोपरि है। हम जन सामान्य के लिए समर्पित हैं। आजादी के दीवानों ने देश के लिए अपना लहू बहाया था, हम उनके सपनों को पूरा करने के लिए पसीना बहाते हैं। अच्छी योजनाओं के साथ ही उन्हें लागू करना और उनका लाभ 100 प्रतिशत लाभार्थी तक पहुंचाना सुशासन का पैमाना है।

बुंदेलखंड क्षेत्र ने बूंद-बूंद पानी के लिए संघर्ष किया

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि केन-बेतवा लिंक परियोजना से बुंदेलखंड क्षेत्र की समृद्धि और खुशहाली के द्वार खुलेंगे। बुंदेलखंड क्षेत्र में बूंद-बूंद पानी के लिए संघर्ष किया है, परंतु पूर्ववर्ती सरकारों ने जल संकट का कोई स्थाई समाधान नहीं निकाला। आजादी के सात दशक बाद भी राज्यों के बीच नदियों के जल के लेकर विवाद चलते रहे, परंतु उन्हें दूर करने का कोई ठोस प्रयास नहीं किया गया। जब अटल जी की सरकार बनी तो उन्होंने नदी जोड़ो के रूप में इसका स्थाई हल निकाला और उसका कार्य भी शुरू कर दिया गया, परन्तु 2004 के बाद वह बंद कर दिया गया। आज अटल जी का नदी जोड़ने का सपना मध्यप्रदेश की भूमि पर साकार होने जा रहा है।

प्रधानमंत्री की पहल से चंबल-मालवा और बुंदेलखण्ड में होगी पर्याप्त पेयजल और सिंचाई की व्यवस्था : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी मध्यप्रदेश के संदर्भ में आधुनिक युग के भगीरथ हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार राजा भगीरथ के प्रयासों से अवतरित हुई गंगा जी ने सभी को नया जीवन प्रदान किया था, उसी प्रकार प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भारत में नए युग का सूत्रपात किया है। सकारात्मक सोच और प्रयासों से 10-12 साल में किस प्रकार परिस्थितियों में सुधार होता है, प्रधानमंत्री श्री मोदी का कार्यकाल इसका श्रेष्ठ उदाहरण है और हम सब इसके प्रत्यक्षदर्शी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सभी प्रकार से संपन्न वीरों की भूमि बुंदेलखंड, सूखे से सदैव प्रभावित रहा। पिछली सरकारों ने बुंदेलखंड के विकास को प्राथमिकता नहीं दी। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने क्षेत्र को सूखा मुक्त करने और जल की पर्याप्त व्यवस्था करने का सपना देखा था। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इस सपने को धरातल पर उतारने की पहल की। केन बेतवा लिंक परियोजना के शुभारंभ के साथ ही कुछ दिन पहले 35 हजार करोड़ रूपए लागत की पार्वती-काली सिंध-चंबल लिंक परियोजना का शुभारंभ ऐतिहासिक था। इन परियोजनाओं से चंबल, मालवा और संपूर्ण बुंदेलखंड क्षेत्र को पीने का पानी एवं सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होगी और उद्योग-धंधों को पानी मिलेगा।

अजरबैजान से रूस जा रहा विमान कजाकिस्तान में क्रैश

42 लोगों के मारे जाने की है आशंका,67 यात्री थे सवार, क्रैश होने से पहले इमरजेंसी लैंडिंग की मांगी थी परमीशन

अस्ताना (एजेंसी)। कजाकिस्तान के अक्ताऊ में बुधवार सुबह एक पैसेंजर प्लेन क्रैश हो गया। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक प्लेन में 62 यात्री और 5 क्रू मेंबर्स थे। इनमें 25 लोगों को बचा लिया गया है। 22 को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे में 42 लोगों के मारे जाने की आशंका जताई जा रही है। विमान अजरबैजान से रूस के चेचन्या प्रांत की राजधानी ग्रोज्नी जा रहा था।

लेकिन उसे कजाख शहर अक्ताऊ से लगभग 3 किमी दूर इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। एजेंसियों के मुताबिक घने कोहरे के चलते फ्लाइट का रूट बदला गया था। प्लेन ने क्रैश होने से

पहले एयरपोर्ट के कई चक्कर लगाए थे। पायलट ने इमरजेंसी लैंडिंग की परमीशन भी मांगी थी। हालांकि, बाद में उसे एयरपोर्ट के पास बीच पर इमरजेंसी लैंडिंग के लिए मजबूर होना पड़ा। क्रैश हुआ विमान अजरबैजान एयरलाइन्स का एम्ब्रेयर 190 मॉडल था। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो में दिख रहा है कि विमान के क्रैश होते है उसमें आग लग गई। कजाकिस्तान इमरजेंसी मिनिस्ट्री ने बताया कि अजरबैजान का विमान बाकू से ग्रोन्जी के लिए जा रहा था। फिलहाल राहत और बचाव कार्य जारी है। ग्रोन्जी रूस के चेचन्या इलाके में आते हैं। अजरबैजान एयरलाइंस ने कहा है कि हादसाग्रस्त विमान एंबरेयर 190 एयरक्राफ्ट था। इसकी बाकू से ग्रॉन्जी रूट पर इसे इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। बताया जा रहा है कि ग्रोज्नी में कोहरे के कारण इसका रूट बदल दिया गया था। अजरबैजान एयरलाइंस की तरफ से अब तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। कजाकिस्तान के आपातकालीन मंत्रालय ने बताया कि दुर्घटना के तुरंत बाद आपातकालीन सेवाएं मौके पर पहुंच गईं। यह विमान अजरबैजान एयरलाइंस का एम्ब्रेयर ईआरजे-190 था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c | न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 26 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बुरहानपुर में स्कूल के पास मिली अवैध हथियार की फैक्ट्री

पुलिस ने छह पिस्टल सहित 14 हथियार किए बरामद

बुरहानपुर (नप्र)। खकनार थाना क्षेत्र के पाचोरी गांव में छापा मार कर पुलिस ने फिर अवैध हथियार बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ी है। सिकलीगर सरकारी स्कूल के पास टपरी में यह फैक्ट्री चला रहे थे। पुलिस ने पिस्टल बना रहे पाचोरी गांव के हरविंदर सिंह जुनेजा 21 वर्ष, खरगोन निवासी प्यार सिंग 30 वर्ष और पाचोरी के एक नाबालिग को गिरफ्तार किया है।

मौके से आठ पूरी तरह तैयार देसी पिस्टल, छह अर्ध निर्मित पिस्टल, नौ मैग्जीन सहित पिस्टलों के कलपुर्जे और हथियार बनाने में उपयोग होने वाले औजार बरामद किए हैं। बुधवार दोपहर एडिशनल एसपी अंतर सिंह कनेश ने प्रेस कान्फ्रेंस कर बताया कि 24 दिसंबर को खकनार थाना प्रभारी अभिषेक जाधव को मुखबिर से इस फैक्ट्री के संबंध में सूचना मिली थी। वे एक निजी वाहन में सादी वर्दी में पुलिस कर्मियों के साथ ठिकाने पर पहुंचे और टपरी को चारों

ओर से घेर लिया, जिससे आरोपियों को भागने का अवसर नहीं मिला। आरोपियों के खिलाफ 25 आर्म्स एक्ट की कई धाराओं के साथ संगठित अपराध की धारा 111 बीएनएस भी लगाई गई है।

पहले भी पकड़े जा चुके हैं आरोपी- अवैध रूप से पिस्टल बनाते पकड़े गए आरोपी हरविन्दर पुत्र हरबनसिंग जुनेजा निवासी पाचोरी के खिलाफ पूर्व में खकनार थाने अवैध हथियार तस्करी का मामला दर्ज है। तब उसे छह हस्त निर्मित पिस्टल व हथियार बनाने के सामान के साथ गिरफ्तार किया था। आरोपी प्यारसिंग पुत्र सरदार सिंह निवासी ग्राम गारी थाना बिस्टान जिला खरगोन के खिलाफ थाना नसरुल्लाह गंज जिला सीहोर और थाना भगवानपुरा में मामला दर्ज हैं।

फैक्ट्री पकड़ने में इनकी रही भूमिका

अवैध हथियार बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ने में थाना प्रभारी खकनार अभिषेक जाधव के अलावा उप निरीक्षक शिवपाल सरयाम, रामेश्वर बकोरिया, एएसआइ अशोक चौहान, अमित हनोतिया, तारक अली, प्रेमलाल पाल, महेन्द्र कुसमाकर, प्रधान आरक्षक मेलसिंह, सत्यभान, मुकेश, राजकुमार।

निखिलेश, आरक्षक मंगल पालवी, विजेन्द्र, गोलू, जितेन्द्र, आयुश, शुभम, महिला आरक्षक मीना मोरे, रजनी चौहान थाना गणपति नाका और स्वाति थाना कोतवाली की सराहनीय भूमिका रही है।

पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में की एयर स्ट्राइक, 46 मरे

- पाकिस्तान ने तालिबान के ठिकानों पर किया हमला, बदले की चेतावनी

इस्लामाबाद/काबुल (एजेंसी)। पाकिस्तान ने मंगलवार देर रात अफगानिस्तान में एयरस्ट्राइक कर पाकिस्तानी तालिबान के संदिग्ध ठिकानों को निशाना बनाया। ये हमले पाकिस्तानी सीमा से लगे अफगानिस्तान के पकटिका प्रांत के पहाड़ी इलाकों में किए गए। इस एयरस्ट्राइक में कम से कम 46 लोग मारे गए हैं। न्यूज एजेंसी ने पाकिस्तानी अधिकारियों के हवाले से बताया कि हमले में पाकिस्तानी तालिबान यानी तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के ट्रेनिंग सेंटर को तबाह किया गया है। अधिकारियों ने कई आतंकियों के मरने का दावा किया। हालांकि, ये साफ नहीं है कि पाकिस्तानी विमान अफगानिस्तान में कितने भीतर गए और हमले कैसे किए। इस साल पाकिस्तान ने दूसरी बार अफगानिस्तान में एयरस्ट्राइक की है। अफगानिस्तान बोला- जवाबी कार्रवाई करेंगे अफगानिस्तान के रक्षा मंत्रालय ने पाकिस्तानी एयरस्ट्राइक की निंदा की है।

संक्षिप्त समाचार

सीएम उमर के लिए खरीदी जाएंगी 3 करोड़ की कारें

- पूर्व मेयर बोले-विधायकों को सैलरी नहीं मिल रही, इनकी राजशाही कम नहीं हो रही

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के लिए 7 फॉर्च्यूनर और 1 रेंज रोवर कार खरीदी जाएंगी। इन 8 कारों की कुल कीमत 3 करोड़ रुपए होगी। इनमें से 4 गाड़ियां सीएम के अलग-अलग दौरे के लिए दिल्ली में रखी जाएंगी, जबकि 2 कार श्रीनगर और 2 कार जम्मू में रखी जाएंगी। राज्य सरकार की ओर से इसकी मंजूरी दे दी गई है। इसे लेकर पूर्व मेयर जुनैद मट्टू ने कहा है कि एक तरफ विधायकों को पहली सैलरी नहीं मिली है, वहीं, दूसरी तरफ अब्दुल्ला की राजशाही कम नहीं हो रही।

संभल के चंदौसी में बावड़ी की खुदाई जारी

- एएसआई ने कार्बन डेटिंग शुरू की, गलियारे भी मिले

संभल (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संभल स्थित मोहल्ला लक्ष्मणगंज प्राचीन बावड़ी कुएं का सर्वे करने बुधवार सुबह एएसआई की टीम पहुंची। पांचवे दिन भी बावड़ी की खुदाई का कार्य जारी है। एएसआई टीम ने

मीडिया से दूरी बनाते हुए बावड़ी कुएं की सुरंग में कार्बन डेटिंग का कार्य शुरू कर दिया है। कुएं की फोटो और वीडियोग्राफी शुरू कर दी है। इसके बाद अनुमान लगाया जा रहा है कि एएसआई की टीम बांके बिहारी मंदिर भी पहुंच सकती है।

केजरीवाल के ऐलान को दिल्ली सरकार ने ही नकारा

- कहा-मुफ्त इलाज, महिलाओं को 2100 देने की स्कीम नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार ने अरविंद केजरीवाल की दो बड़ी चुनावी घोषणाओं पर ब्रेक लगा दिया है। सरकार के दो विभागों ने बुधवार को अखबारों में विज्ञापन छपवाकर कहा कि राज्य में महिला सम्मान और संजीवनी जैसी कोई योजना नहीं है। पहला इश्तिहार महिला और बाल विकास

विभाग ने महिला सम्मान योजना को लेकर जारी किया है। इसमें कहा गया है कि दिल्ली सरकार ने ऐसा कोई नोटिफिकेशन जारी नहीं किया है। दूसरा विज्ञापन दिल्ली के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने संजीवनी योजना को लेकर जारी किया। इसमें कहा गया है कि सरकार ऐसी कोई स्कीम नहीं चला रही है। लोगों को कार्ड बनाने के नाम पर निजी जानकारी न देने की सलाह दी है।

बार्डर के दो गांवों में फायरिंग से तनाव, भारी सुरक्षाबल तैनात

क्रिसमस पर भी दहला मणिपुर, जमकर उपद्रव

इंफाल (एजेंसी)। पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर क्रिसमस के दिन भी भारी गोलीबारी से दहल उठा। सुरक्षा बल के सूत्रों ने बताया कि क्रिसमस के दिन राज्य की राजधानी इंफाल से सटे पहाड़ी जिलों इंफाल ईस्ट और कांगपोकपी जिलों के बीच अंतर-जिला सीमावर्ती दो गांवों में भारी गोलीबारी हुई है। हालांकि, इस गोलीबारी में कितने लोग हताहत हुए हैं,

- पूर्व मुख्य न्यायाधीश का दावा, हिंसा के पीछे हैं अदृश्य ताकतें

उसकी सटीक जानकारी नहीं मिल सकी है लेकिन इस घटना से इलाके में भारी तनाव है, जिसे देखते हुए प्रभावित गांवों में बड़ी संख्या में सुरक्षा बल भेजे गए हैं। वहीं मणिपुर हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायधीश सिद्धार्थ मृदुल ने मंगलवार को कहा कि राज्य की स्थिति को तुरंत नियंत्रण में लाने की आवश्यकता है, नहीं तो यहां कुछ नहीं बचेगा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि मणिपुर को अदृश्य ताकतें जला रही हैं

और यहां हिंसा को बढ़ावा दे रही हैं। उन्होंने मंगलवार को ये बातें कही हैं। आपको बता दें कि जस्टिस मृदुल ने बतौर मुख्य न्यायाधीश अक्टूबर 2023 में कार्यकाल शुरू किया था। इसी दौरान यहां हिंसा शुरू हो चुकी थी। बीते मई तक वहां से हिंसा खबरें सामने आती रही। दिल्ली में एक पैनल चर्चा के दौरान, जस्टिस मृदुल ने कहा कि कुछ तत्व मणिपुर को लगातार जलते हुए रखने में अपनी रुचि रखते हैं। उन्होंने कहा-मैं अब इस विचार से सहमत होने लगा हूं कि इस निरंतर हिंसा के पीछे एक अदृश्य हाथ है। यह हाथ किसका है, यह मुझे अभी तक स्पष्ट नहीं है। इसके पीछे कई कारक हो सकते हैं। आपको बता दें कि वह पिछले महीने इस अपने पद से रिटायर हुए हैं। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा,मुझे लगता है कि कोई ना कोई इस हिंसा को बढ़ाने में शामिल है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि हर बार जब स्थिति सामान्य होने लगती है, तो अचानक नई हिंसा की लहर आती है। इससे मुझे यह विश्वास होता है कि इसके पीछे कुछ ताकतें हैं। ये ताकतें बाहरी और स्थानीय दोनों हो सकती हैं। मणिपुर में लगभग 19 महीनों से हिंसा का दौर जारी है। यहां जातीय संघर्ष का कोई अंत होता नहीं दिख रहा है। हिंसा और प्रतिशोध के हमलों की इस श्रृंखला ने केंद्र सरकार को और अधिक सैनिक भेजने, अफस्पा फिर से लागू करने और विभिन्न समूहों के प्रतिनिधियों के साथ वार्ता करने के लिए मजबूर किया है। हालांकि इन कदमों का ज्यादा असर नहीं दिखा है। मणिपुर में अब तक लगभग 240 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। केंद्र ने स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए बार-बार राज्य में अधिक सैनिक भेजे हैं। वर्तमान में भारतीय सेना, असम राइफल्स, सीआरपीएफ और मणिपुर पुलिस सहित लगभग 60,000 सुरक्षा कर्मी राज्य में तैनात हैं।

बड़ी खोज

फ्रांस में मिली रोमन युग के सोने की अंगूठी

- बनी है देवी वीनस की मूर्ति, 1800 साल पुरानी खोज से एक्सपर्ट हैरान

पेरिस (एजेंसी)। फ्रांस के ब्रिटनी में पुरातत्वविदों को 1,800 साल पुरानी एक सोने की अंगूठी मिली है। इस अंगूठी पर युद्ध की देवी वीनस की तस्वीर उकेरी हुई है। अंगूठी के साथ-साथ कैरोलिंगियन साम्राज्य के समय के कुछ सिक्के भी मिले हैं। यह खोज ब्रिटनी के पेस शहर के पास हुई है। एक्सपर्ट को इस बात ने हैरत में डाला है कि खुदाई में मिली अंगूठी आज भी काफी अच्छी हालत में है। अंगूठी पर वीनस द विक्टोरियस की नक्काशी है। यह अंगूठी दूसरे या तीसरे शताब्दी की मानी जा रही है, जब ये क्षेत्र रोमन साम्राज्य था। रिपोर्ट के मुताबिक, जिस स्थान पर ये अंगूठी मिली है। उसी जगह पर मध्ययुगीन

काल के एक छोटे से गांव के अवशेष भी मिले हैं। यह गांव भी करीब 1,300 साल पुराना हो सकता है। वहां घरों, खेतों, चरागाहों और अनाज रखने के लिए भूमिगत सोलिस के अवशेष मिले हैं। गांव को 10वीं शताब्दी में वाइकिंग युग के दौरान छोड़ दिया गया था। गांव में बर्तन, खाना पकाने के बर्तन और चक्की के पाट भी मिले हैं। इसमें सबसे खास खोज 9वीं से 10वीं शताब्दी के एक दर्जन सिक्के हैं। ये सिक्के कैरोलिंगियन साम्राज्य के समय के हैं। फ्रांसीसी राष्ट्रीय निवारक पुरातत्व अनुसंधान संस्थान के अनुसार, यह अंगूठी असाधारण रूप से संरक्षित अवस्था में है। अंगूठी में निकोलो नाम का रत्न है, जिस पर नक्काशी की गई है। निकोलो एक प्रकार का गोमेद पत्थर होता है। इसे इस तरह काटा जाता है कि इसके ऊपर नीले रंग की एक पतली परत और नीचे काले रंग की एक मोटी परत होती है। इस रत्न को सोने से जड़ा गया है और इसके चारों ओर रेखाएं उकेरी गई हैं। रोमन साम्राज्य के दौरान की सड़क भी मिली है, इसी के पास ये सोने की अंगूठी थी। इस सड़क पर गाड़ियों के पहियों के निशान अभी भी दिखाई देते हैं। इन निशानों से पता चलता है कि इस सड़क पर पहियदार गाड़ियाँ चलती थीं। ये गाड़ियाँ शायद पास के बस्ती में रहने वाले लोगों की सेवा के लिए इस्तेमाल होती थीं।

ट्रैफिक चेकिंग में युवक की पिटाई करने वाले एसआई पर गिरी गाज

रावत समाज के आंदोलन की चेतावनी पर एसपी ने किया लाइन अटैच

शिवपुरी (नप्र)। मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में वाहन चेकिंग के दौरान हैरान करने वाला मामला सामने आया। यहां यातायात थाने के सामने बाइक का चालान करने को लेकर पुलिसकर्मी ने एक युवक से विवाद हो गया। इसके बाद युवक को थाने ले जाते समय पिटाई कर दी। इसका वीडियो वायरल होने का मामले ने तूल पकड़ लिया है। अब संबंधित मामले में मारपीट करने वाले यातायात सूबेदार अरूण जादौन पर एसपी ने ऐक्शन लिया है।

दरअसल, शिवपुरी एसपी ने ट्रैफिक सूबेदार को लाइन अटैच कर दिया है। कार्रवाई से पहले शिवपुरी जिला मुख्यालय पर रावत समाज के लोगों ने संबंधित युवक की मारपीट के विरोध में रैली निकालकर कलेक्टर और एसपी को अलग-अलग ज्ञापन दिए थे। इस मामले में रावत समाज ने अल्टीमेटम दिया था।

ऐक्शन नहीं लिया तो होगा आंदोलन- रावत समाज के लोगों ने कहा था कि मारपीट करने वाले सूबेदार और एक अन्य सिपाही पर कार्रवाई नहीं की गई तो आगे

आंदोलन और तेज किया जाएगा। रावत समाज ने 5 जनवरी तक का अल्टीमेटम दिया था। इसके बाद देर शाम को आनन-फानन में संबंधित यातायात सूबेदार को एसपी ने लाइन अटैच कर दिया है।

रावत समाज ने पिटाई का किया विरोध, दिया ज्ञापन- अपने समाज के परमाल रावत जो एक किसान हैं उनके साथ यातायात थाने के सामने चालान को लेकर मारपीट की गई थी।

नड्डा के घर 'एनडीए' नेताओं की बैठक

दिल्ली-बिहार के लिए तैयार हुई खास रणनीति

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के आवास पर बुधवार को राष्ट्रीय

जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के नेताओं की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का उद्देश्य गठबंधन सहयोगियों के बीच बेहतर तालमेल को मुस्तैद करना था। बैठक में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और मंत्री राम मोहन नायडू किंजरापु सहित कई प्रमुख नेता शामिल हुए।

प्रयागराज महाकुंभ से पहले 'डरेंगे तो मरेंगे' के होर्डिंग्स

जगद्गुरु रामानंदाचार्य नरेंद्राचार्य ने लगवाए पोस्टर

प्रयागराज (एजेंसी)। यूपी में 'बंटेंगे तो कटेंगे' के बाद अब नया पोस्टर सामने आया है। प्रयागराज में बुधवार को महाकुंभ से पहले 'डरेंगे तो मरेंगे' के होर्डिंग लग गए हैं। ये होर्डिंग जगद्गुरु रामानंदाचार्य नरेंद्राचार्य की ओर से नागावासुकी मंदिर के सामने लगवाए गए हैं। वहीं, दूसरे पोस्टर में सभी हिन्दुओं में एकता हो, वक्फ के नाम पर संपत्ति की लूट है, धर्मनिरपेक्ष देश में यह कैसी छूट है। लिखा गया है। जगद्गुरु रामानंदाचार्य की ओर से लगवाए गए होर्डिंग के बैकग्राउंड में बंद मुट्ठी वाली तस्वीर की परछाई दिख रही है।

कुशासन का अंत, सुशासन हमारा सबसे बड़ा संकल्प

- राजनाथ सिंह और सीएम योगी ने किया अटल प्रतिमा का लोकार्पण

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा का अनावरण किया गया। इस मौके पर सीएम योगी आदित्यनाथ भी मौजूद रहे। अटल प्रतिमा राजधानी लखनऊ में गोमती किनारे कुड़ियाघाट पर स्थापित की गई है। रक्षा मंत्री और मुख्यमंत्री ने प्रतिमा का निर्माण करने वाले अमरपाल सिंह को सम्मानित किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अटल संकल्प की प्रतिज्ञा दिलाई। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत एमएलए नीरज बोरा ने किया। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100वीं जयंती के अवसर पर लोकभवन में सुशासन दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सीएम योगी आदित्यनाथ और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अटल जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। उनके जीवन और कार्यों को याद किया। शताब्दी समारोह कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि अटल जी ने भारत को ऐसा सुशासन दिया, जिसने देश को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। उनकी सरकार के दौरान विकास दर 8.4 प्रतिशत तक पहुंची, जो आजाद भारत में एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी।

पाकिस्तानी सेना की 53 साल बाद बांग्लादेश में एंट्री

- मोहम्मद यूनुस सरकार ने भरी है हामी, भारत के लिए बड़ा खतरा

इस्लामाबाद (एजेंसी)। बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने पाकिस्तान के साथ गोला बारूद खरीद की खरीद करने और समुद्री रास्ते से कारोबार शुरू करने के बाद नया कदम उठाया है। पाकिस्तान की सेना और आईएसआई की भी अब बांग्लादेश में एंट्री हो रही है। पाकिस्तानी फौज के शीर्ष अधिकारी जल्द ही बांग्लादेश का दौरा कर सकते हैं। साल 1971 में पाकिस्तानी सेना के बांग्लादेश (उस समय पूर्वी पाकिस्तान) से निकालने के बाद यानी 53 साल बाद ये होने जा रहा है।

अब अंतरिक्ष में पालक उगाने की हो गई तैयारी

- इसरो का स्पैडेक्स कोशिकाएं लेकर जाएगा, 30 को लॉन्चिंग
- स्पेस डॉकिंग तकनीक वाला चौथा देश होगा भारत, उपलब्धि

श्रीहरिकोटा (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) 2024 का आखिरी मिशन 30 दिसंबर को लॉन्च करने वाला है। इसे स्पैडेक्स नाम दिया गया है। स्पैडेक्स यानी स्पेस डॉकिंग एक्सपेरीमेंट। यह मिशन रात 9.58 बजे आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च होगा। स्पैडेक्स मिशन का मकसद अंतरिक्ष में स्पेसक्राफ्ट को डॉक और अनडॉक करने वाली तकनीक डेवलप करना और उसका प्रदर्शन करना है। दरअसल, जब कोई स्पेस मिशन लॉन्च किया जाता है तो उसके मकसद हासिल करने के लिए कई रॉकेट लॉन्च करने होते हैं। इसके लिए अंतरिक्ष में डॉकिंग की जरूरत पड़ती है। भारत के लिए यह तकनीक मून मिशन, चंद्रमा से सैंपल लाने और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन बनाने के लिए बहुत अहम है। स्पैडेक्स मिशन के जरिए भारत अंतरिक्ष डॉकिंग तकनीक रखने वाला दुनिया का चौथा देश बन जाएगा। इससे पहले रूस, अमेरिका और चीन स्पेस डॉकिंग में सफलता हासिल कर चुके हैं। रॉकेट स्पैडेक्स मिशन के जरिए अपने साथ 200-200 किलो के 2 स्पेसक्राफ्ट लेकर जाएगा। इन्हें चेजर और टारगेट नाम दिया गया है। इनसे रिसर्च और डेवलपमेंट से जुड़े 24 पेलोड भी भेजे जाएंगे। इन पेलोड्स को पृथ्वी से 700 किमी की ऊंचाई पर डॉक किया जाएगा। इनमें से 14 पेलोड इसरो के और बाकी 10 स्टार्टअप और एकेडमी के हैं। इनमें से एक है- एमिटी प्लांट एक्सपेरिमेंटल मॉड्यूल इन स्पेस पेलोड, जिसे एमिटी यूनिवर्सिटी ने बनाया है।

इंदौर एयरपोर्ट पर फिर खुलेगी शराब दुकान

एक दुकान एराइवल तो दूसरी डिपार्चर एरिया में रहेगी, पहले हो चुका विरोध

इंदौर। मध्यप्रदेश के एकमात्र इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर एक बार फिर शराब दुकान खोलने की कवायद इंदौर एयरपोर्ट प्रबंधन ने शुरू कर दी है। इस बार एयरपोर्ट पर एक नहीं, बल्कि दो दुकानें खोली जाएंगी। एक दुकान इंदौर आने वाले यात्रियों के लिए अराइवल एरिया में होगी, वहीं दूसरी दुकान इंदौर से जाने वाले यात्रियों के लिए डिपार्चर के सिक्योरिटी होल्ड एरिया में खोली जाएगी। दोनों ही दुकानों के लिए एयरपोर्ट प्रबंधन ने टेंडर जारी कर दिए हैं। बता दें कि पहले भी यहां एक दुकान खोली गई थी, जो की अनियमितताओं के कारण बंद हो गई थी।

20 स्क्वायर मीटर की दुकान, न्यूनतम किराया 7.25 लाख रुपए महीना

इंदौर एयरपोर्ट प्रबंधन द्वारा जारी किए गए टेंडर 9 जनवरी को खोले जाएंगे। अधिकारियों ने बताया कि पहले जहां टेंडर में करीब 5 लाख रुपए महीने की न्यूनतम कीमत रखी गई थी। हालांकि टेंडर करीब 20 लाख रुपए महीने की अधिकतम बोली पर जारी किया गया था। वहीं, इस बार इसे बढ़ाकर 7.25 लाख रुपए की न्यूनतम कीमत तय की गई है। दूसरी ओर, पहले जहां शराब दुकान के लिए कंपनी को 40 वर्ग मीटर स्थान दिया गया था, इस बार इसे घटाकर 20 वर्ग मीटर कर दिया गया है। बता दें कि एयरपोर्ट पर पहले दुकान संचालित करने वाली हिमालया ट्रेडर्स कंपनी ने 6 सितंबर 2023 को ही अपना कॉन्ट्रैक्ट सरेंडर करने का लेटर एयरपोर्ट प्रबंधन को सौंप दिया था। नियमानुसार, किसी भी व्यावसायिक गतिविधि के बंद होने की सूचना मिलने पर एयरपोर्ट प्रबंधन को तुरंत दोबारा इसे शुरू करने के लिए टेंडर जारी करने चाहिए थे। लेकिन प्रबंधन ने इसमें एक साल से अधिक का समय ले लिया। उक्त कंपनी से प्रबंधन को करीब 22 लाख रुपये हर महीने मिलते थे।

जनवरी 2024 में दुकान बंद हुई थी

इंदौर एयरपोर्ट पर यात्रियों की सुविधा के लिए पहली बार शराब दुकान 31 दिसंबर 2022 को एयरपोर्ट के अराइवल एरिया में भोपाल की हिमालया ट्रेडर्स ने खोली थी। कई अनियमितताओं और शिकायतों के साथ ही टेंडर में तय राशि जमा न करने के बाद कंपनी ने 3 जनवरी 2024 से दुकान बंद कर दी थी।

इसके बाद से एयरपोर्ट पर शराब दुकान नहीं थी। अब इसे दोबारा शुरू करने के लिए एयरपोर्ट प्रबंधन ने टेंडर जारी किए हैं। खास बात यह है कि पहली बार एयरपोर्ट पर दो दुकानें खोलने के लिए टेंडर जारी किए गए हैं, जिससे आने और जाने वाले दोनों ही यात्रियों को यह सुविधा मिल सकेगी। ये दुकानें पहले की ही तरह ड्यूटी पेड शराब दुकानें होंगी।

शराब दुकान को लेकर विरोध

इससे पहले जब एयरपोर्ट पर शराब दुकान खोलने के टेंडर जारी किए गए थे, तब शहर के कई सामाजिक संगठनों और जनप्रतिनिधियों ने देवी अहिल्या के नाम पर बने एयरपोर्ट में शराब बेचने को लेकर कड़ा विरोध जताया था। हालांकि, प्रबंधन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर के हर एयरपोर्ट में यह सुविधा होने की बात कहते हुए इस विरोध को खारिज कर दिया था।

इंदौर का आईएसबीटी नए साल में होगा शुरू

100 करोड़ की लागत से तैयार, यूपी-राजस्थान-गुजरात की बसों का होगा संचालन

इंदौर। इंदौर को नए साल में एक बड़ी सौगात मिलने जा रही है। शहर के कुमेड़ी क्षेत्र में बने इंटर स्टेट बस टर्मिनल (आईएसबीटी) का संचालन जनवरी 2024 से शुरू होगा। यह शहर का पहला फुल एयर-कंडीशन बस स्टैंड होगा, जहां से गुजरात, राजस्थान और दिल्ली की ओर जाने वाली 186 बस संचालित होंगी। क्षमता प्रतिदिन 1440 बसों का संचालन संभव।60 हजार यात्री रोजाना सफर करेंगे। वातानुकूलित टर्मिनल में 500 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था। सुविधाएं 15 एकड़ क्षेत्र में बना टर्मिनल।मेन बिल्डिंग और बस संचालन क्षेत्र तैयार। उज्जैन सिंहस्थ-2028 के लिए भी उपयोगी।

बैठक एवं निर्णय- मंगलवार को कलेक्टर आशीष सिंह की अध्यक्षता में बैठक आयोजित हुई, जिसमें बस संचालकों से सहमति बनी। संचालन से जुड़ी तैयारियों पर चर्चा की गई। इस बस स्टैंड के चालू होने से शहर वासियों को आधुनिक सुविधाओं से लैस परिवहन का अनुभव मिलेगा।

कुमेड़ी स्थित आईएसबीटी बनकर लगभग तैयार है- कुमेड़ी में बनने वाले आईएसबीटी को यात्रियों और ट्रैवल संचालकों की जरूरतों को ध्यान में रखकर आधुनिक सुविधाओं से लैस किया गया है। इस नए बस टर्मिनल का उद्घाटन जनवरी 2024 में किया जाएगा, जिससे इंदौर के सार्वजनिक परिवहन में एक नई क्रांति आने की उम्मीद है। ट्रैवल संचालकों के लिए अलग ऑफिस और स्टाफ सुविधाएं ड्राइवर-कंडक्टर और अन्य स्टाफ के लिए अलग बिल्डिंग।रेस्ट रूम, पीने के पानी और टॉयलेट की सुविधा। ट्रैवल संचालकों के लिए 32 ऑफिस तैयार।100 करोड़ की लागत से विकसित। यात्रियों के लिए खास इंतजाम 14 टिकट काउंटर। आसान टिकट बुकिंग के लिए। 43 प्लेटफार्म। यात्रियों के बैठने और उतरने की सुविधा। बसों की पार्किंग और अलग-अलग आने-जाने की व्यवस्था। रेस्टोरेंट, एटीएम और 32 अन्य दुकानों का प्रावधान। कुमेड़ी का नया बस स्टैंड, जिसे सितंबर 2019 में मंजूरी मिली थी, पहले दिसंबर 2022 तक पूरा होना था।

इंदौर में महिला ने पुलिस कर्मी का कॉलर पकड़ा

खजराना मंदिर में हंगामा, गार्ड ने घसीटते हुए बाहर निकाला, बच्चों को ले जाने का आरोप

इंदौर। इंदौर के खजराना मंदिर में बुधवार को महिला ने हंगामा करते हुए एक पुलिसकर्मी का कॉलर पकड़ लिया। यहां से महिला को थाने ले जाया गया। पुलिस ने प्रतिबंधात्मक धाराओं में कार्रवाई की बात कही है। टीआई मनोज सेंधव के मुताबिक, मंदिर के अन्न क्षेत्र में महिला ने दो बच्चों को रोका। उनसे पूछताछ करने लगी। बच्चों ने इसकी जानकारी अपने पिता को दी, जो मंदिर में ही गार्ड हैं। गार्ड ने महिला पर बच्चों को ले जाने का आरोप लगाया। महिला को वहां मौजूद पुलिसकर्मी के पास ले गए। यहां महिला ने हंगामा कर दिया। इसके बाद महिला को सुरक्षा गार्ड ने पकड़कर घसीटते हुए बाहर की तरफ किया। टीआई के मुताबिक, महिला की मानसिक हालत ठीक नहीं है। उसके परिवार की जानकारी निकाली जा रही है।

कांग्रेस ने सांसद को भेंट की संविधान की किताब

शंकर लालवानी से पूछा- क्या आप अमित शाह के बयान से सहमत हैं

इंदौर। कांग्रेस नेताओं ने बुधवार को इंदौर सांसद शंकर लालवानी को संविधान की किताब भेंट की। उनसे पूछा कि क्या आप अमित शाह के बयान से सहमत हैं। जिला कांग्रेस सेवा दल के कार्यकारी अध्यक्ष विवेक खंडेलवाल ने बताया कि गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के लिए आपत्तिजनक टिप्पणी की गई। पूरे देश में हर वर्ग, हर संप्रदाय इसका विरोध कर रहा है। दरअसल, 17 दिसंबर को शाम 7:45 बजे राज्यसभा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा था, मान्यवर अभी एक फैशन हो गया है। अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर। इतना नाम अगर भगवान का लेते, तो 7 जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता।

इंडोनेशिया के संत डॉ. ई. मादे धर्मयश इंदौर आए

इंदौर। बाली (इंडोनेशिया) के संत रसाचार्य डॉ. ई. मादे धर्मयश जी इंदौर आए। साहित्यकार, समाजसेवी डॉ. बनवारी लाल जाजोदिया यथार्थ के आतिथ्य में आए डॉ. ई. मादे धर्मयश जी ने उज्जैन में महाकाल और ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए। इसके साथ ही इंदौर के सभी प्रमुख मंदिर, राजवाड़ा देखकर काफी खुश हुए। मालवा की दाल बाटी, बाफला, उज्जैन में मक्का, बाजरा, ज्वार की रोटी उन्हें बहुत पसंद आई। इंदौर से वे खजुराहो के लिए रवाना हुए और मप्र के अन्य शहरों से होते हुए प्रयागराज महाकुंभ पहुंचेंगे। इस बीच, बाली के संत रोटरी क्लब ऑफ इंदौर के नंदकिशोर उपाध्याय के यहां आयोजित पारिवारिक मिलन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर अपने आशीष वचनों में उन्होंने कहा कि मानव जीवन ही औरों का परोपकार करने के लिए ही मिला है, इसे व्यर्थ न जाने दें। उनका क्लब की ओर से शॉल, श्रीफल, मोतियों की माला से क्लब अध्यक्ष हर्षवर्धन दीक्षित, उपाध्याय, डॉ. जाजोदिया तीनों ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन आकाश अग्रवाल ने किया।

इंदौर में फिर अवैध बाड़ों के खिलाफ ऐक्शन

दो बाड़ों को तोड़ा, हिन्दू संगठनों में नाराजगी

इंदौर। इंदौर में फिर पशु पालन शुरू हो गया है और अवैध बाड़े भी बनने लगे हैं, लेकिन अब उनके खिलाफ फिर नगर निगम ने कमर कसी है। बुधवार को सुबह दो बाड़े रिमूवल गैंग ने तोड़े और 50 से ज्यादा मवेशियों को मुक्त कराया। शहर में 30 से ज्यादा अवैध बाड़े अफसरों ने चिन्हित किए है। जिन्हें नगर निगम तोड़ेगा और पशु पालकों के खिलाफ प्रकरण भी दर्ज कराएगा। बुधवार सुबह नगर निगम की टीम दत्त नगर पहुंची। यहां सार्वजनिक जमीन पर अवैध बाड़ा बनाकर पशुपालन हो रहा था। रहवासियों ने इस बाड़े को लेकर शिकायत की थी कि रात के समय यहां असामाजिक तत्व आते थे और नशाखोरी करते थे। बाड़े पर बुलड़ोजर चलाने से पहले अफसरों ने 30 पशु वाहन में रखवाए और उन्हें गौशाला भेजा गया। इसके बाद बुलड़ोजर से बाड़ा तोड़ा गया। इसके बाद सूर्यदेव नगर में दूसरा अवैध बाड़ा तोड़ने अमला पहुंचा और वहां से 20 पशु मुक्त कराकर यशवंत सागर गौशाला पहुंचाए गए। इसके बाद दूसरा बाड़ा भी तोड़ा गया। आपको बता दे कि तीन साल पहले इंदौर पशु मुक्त हो गया था और धारा -144 लगाकर पशु पालन पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया था, लेकिन फिर धीरे-धीरे अवैध पशु पालन शुरू हो गया।

हिन्दू संगठनों ने की तोड़फोड़- नगर निगम ने अवैध बाड़े तोड़ने का विरोध भी हुआ। बाड़े पर बुलड़ोजर चलाने से पहले अफसरों ने 30 पशु वाहन में रखवाए और उन्हें गौशाला भेजा गया, लेकिन हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं ने ट्रक रोक कर उसमें तोड़फोड़ कर दी।

निगम के कर्मचारियों के साथ मारपीट भी की। इससे निगम कर्मचारी भी नाराज हो गए और उन्होंने हवा बंगला जोन पर प्रदर्शन किया। कार्यकर्ताओं की मारपीट के कारण तीन निगमकर्मी घायल हुए है। हिंदू संगठन पदाधिकारियों का कहना था कि पशुओं को गलत तरीके से गाड़ी में डाला गया। गौशाला में पशुओं की देखभाल की जा रही थी। गौशाला को बैगर नोटिस के तोड़ा गया।

नगर निगम की टीम पर हमला 20 से ज्यादा गाड़ियां फोड़ी

इंदौर। इंदौर शहर के बिजलपुर इलाके में सड़क पर घूमते मवेशियों की पकड़ने पहुंची नगर निगम की टीम पर पशु पालकों ने हमला कर दिया। इस दौरान मवेशियों को ले जा रहे नगर निगम के कर्मचारियों से मारपीट कर गाड़िया में भी जमकर तोड़फोड़ की गई। जानकारी के मुताबिक 20 से ज्यादा वाहनों के कांच फोड़ दिए गए। हमलावरों में से कुछ खुद को बजरंग दल का सदस्य बता रहे थे। नगर निगम द्वारा मवेशियों को वाहनों में दूसकर ले जाने का विरोध कर रहे थे। नगर निगम के कर्मचारियों मवेशियों को वाहनों में ले जा रहे थे। इसी दौरान बड़ी संख्या में पशुपालक हाथ में लाठी-डंडे लेकर वहां पहुंचे और वाहनों के कांच फोड़ने लगे। नगर निगम के कर्मचारियों ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो उनके साथ भी मारपीट की गई। हवा बंगला जोन नगर निगम की टीम बिजलपुर इलाके में कार्रवाई करने पहुंची थी। हमले के बाद कर्मचारी अपनी जान बचाकर वहां से भागे। पशुपालकों ने मवेशियों को वाहनों से बाहर निकालने का प्रयास भी किया।

नगर निगम को आपदा प्रबंधन के लिए मिले 200 करोड़- इंदौर नगर निगम को आपदा प्रबंधन के लिए 200 करोड़ रुपये की राशि मिलेगी। इस राशि से वर्षा जल जमाव एवं वर्षा जल की निकासी की दिशा में काम होगा। निगमायुक्त शिवम वर्मा ने बताया कि हमने पिछले दिनों मुख्यमंत्री से आपदा प्रबंधन के लिए राशि उपलब्ध कराने का आग्रह किया था।

ज्योतिषियों की बेटियां बनीं देश की आंखों का तारा

अंडर-19 टी-20 वर्ल्ड कप के लिए हुई सिलेक्ट

इंदौर। मध्य प्रदेश के दो सामान्य ब्राह्मण परिवार, जहां वेदों की ऋचाएं, कर्मकांड और ज्योतिष शास्त्र दैनिक जीवन का हिस्सा और आजीविका का साधन है। सितारों की चाल नापकर आमजन का जीवन सुगम बनाने वाले इन परिवारों की बेटियां अब आमजन के लिए सितारा बन चुकी हैं। इंदौर की आयुषी शुक्ला और ग्वालियर की वैष्णवी शर्मा अपने खेल कौशल से भारतीय क्रिकेट टीम में शामिल हुई हैं। जिस चुनौती के लिए इन्हें चुना गया है वह अंडर-19 महिला टी-20 विश्व कप की है। दोनों बेटियां अपने प्रदर्शन से टीम में जीत का मंत्र फूंकने को तैयार हैं। भारतीय टीम के स्टैंड बाय में इंदौर की अनादी तागड़े को भी शामिल किया गया है। आयुषी के पिता लालजी शुक्ला जीवनयापन के लिए पंडिताई करते हैं। एक बार पूजन करने पूर्व भारतीय महिला कप्तान संध्या अग्रवाल के घर गए तो उन्होंने बेटी को क्रिकेटर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

इंदौर सहित मप्र की मंडियों में घटी कपास की आवक

2 हजार गांठ कम होकर 18 हजार पर पहुंची

इंदौर। मध्यप्रदेश की मंडियों में कपास की आवक 2 हजार गांठ कम होकर 17 हजार से 18 हजार गांठ की रही। आवक में गिरावट के बावजूद कपास के भाव स्थिर है। कॉटन सीड में भी स्थिरता है। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजारों के प्रभाव से 75 आरडी कॉटन कैंडी में तेजी रही। नए कपास की आवक 17000 (-2000) से 18000 (-2000) गांठ (एक गांठ =170 किलोग्राम) की रही। कपास के भाव 6000 से 7300 रुपए प्रति क्विंटल पर स्थिर रहे। कॉटन सीड भी 2900 से 3150 रुपए प्रति क्विंटल पर स्थिर हैं। मिलर्स के अनुसार बेहतर क्वालिटी के कपास में मांग बनी हुई है। सीसीआई द्वारा बड़े पैमानों पर किसानों का कपास निरस्त किया जा रहा है, जो कि मंडियों में बिक्री के लिए उपलब्ध है। इसके चलते मिलर्स द्वारा भी बेहतर खरीदारी की जा रही है। जानकारों के अनुसार मध्यप्रदेश की मंडियों में व्यापारियों द्वारा कपास की कीमत एमएसपी के स्तर से कम ही रही है। मप्र में 9त्न नमी वाले 73 आरडी कॉटन के भाव अपने पूर्व स्तर 52000 से 52200 रुपए प्रति कैंडी (1 कैंडी=356 किलोग्राम) पर स्थिर रहे हैं। वहीं, मप्र में 9त्न नमीयुक्त 75 आरडी कॉटन के भाव में भी तेजी है। 75 आरडी कॉटन के भाव निचले स्तर पर 300 और ऊपर के स्तर पर 200 रुपए बढ़ाकर 53000 (+300) से 53400 (+200) रुपए प्रति कैंडी पर रहे हैं। 75 आरडी कॉटन में सोमवार को भी 200 रुपए की तेजी आई थी। इस प्रकार दो कारोबारी क्षेत्र के दौरान इसके भाव 500 से 400 रुपए तक बढ़ गए हैं।

भिक्षुकों ने घेरा कलेक्टर कार्यालय, 5 हजार रुपए महीना मांगा

इंदौर। इंदौर में कलेक्टर द्वारा शहर को भिक्षावृत्ति मुक्त बनाने की मुहिम के खिलाफ शुक्रवार को बड़ी संख्या में भिक्षुक, दिव्यांग और कुष्ठ पीड़ित कलेक्टर कार्यालय पर एकत्र होकर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने प्रशासन से मांग की कि उन्हें भिक्षा मांगने की अनुमति दी जाए या उनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी ली जाए। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार द्वारा पेंशन के नाम पर दिए जा रहे 600 रुपए और राशन से उनके परिवार का गुजारा संभव नहीं है। प्रदर्शन में शामिल कुष्ठ पीड़ितों और भिक्षुकों ने संघ का निर्माण कर लिया है, जिसमें सहयोग कुष्ठ निवारण संघ और दिव्यांग हितग्राही भी शामिल हैं। संघ के अध्यक्ष सारंग गायघने और सुभाष भरवाड़ ने बताया कि उनका जीवन भिक्षावृत्ति पर निर्भर है, और कलेक्टर आशीष सिंह द्वारा 1 जनवरी से भिक्षा देने और लेने वालों पर एफआईआर दर्ज करने के आदेश उनके जीवनयापन के अधिकार का हनन हैं।

सहायता की मांग की

कलेक्टर द्वारा चलाई जा रही दीनदयाल रसोई योजना के तहत गरीब और जरूरतमंद लोगों को मात्र पांच रुपए में भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। मजदूर चौराहों और रैन बसेरों पर भी यह सुविधा नगर निगम द्वारा दी जा रही है। शहर की कई सामाजिक संस्थाएं भी इसी तरह की योजनाओं में योगदान दे रही हैं। परदेशीपुरा क्षेत्र में साईं मंदिर समिति द्वारा भी पांच रुपए में भरपेट भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके बावजूद प्रदर्शनकारियों ने प्रति माह 5 हजार रुपए की सहायता राशि की मांग की। उन्होंने अन्य राज्यों का उदाहरण देते हुए कहा कि आंध्रप्रदेश में 6 से 15 हजार रुपए, दिल्ली और हरियाणा में 3 हजार रुपए, और महाराष्ट्र में 4 हजार रुपए मासिक सहायता दी जाती है। इंदौर में भी कम से कम 5 हजार रुपए मासिक सहायता की मांग की गई।

कलेक्टर कर रहे रोजगार प्रशिक्षण की व्यवस्था

कलेक्टर आशीष सिंह ने प्रदर्शनकारियों को स्पष्ट जवाब दिया कि शहर में भिक्षावृत्ति की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने बताया कि निसहाय और जरूरतमंद लोगों के लिए उज्जैन के सेवाधाम में इलाज और रोजगार के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। साथ ही, हातोद के पास पितृ पर्वत क्षेत्र में कुष्ठ रोगियों को घर और खेती के लिए जमीन भी दी गई है। कुष्ठ रोगियों का कहना है कि पेंशन और राशन की मौजूदा व्यवस्था पर्याप्त नहीं है।

संपादकीय

खेल रत्न पर अप्रिय विवाद

देश के आइकन खिलाड़ी मनु भाकर को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार देने को लेकर मचा विवाद दुर्भाग्यपूर्ण है। चिंता की बात यह है कि देश के इस सबसे बड़े खेल पुरस्कार को लेकर तकरीबन हर साल कोई न कोई विवाद होता रहता है। योग्य व्यक्ति को पहले अनदेखा किया जाता है और हल्ला मचने पर उसे पुरस्कार दे दिया जाता है। कहना मुश्किल है कि ऐसा किसी सोची समझी रणनीति के तहत हो रहा है अथवा पुरस्कार देने के लिए जिन लोगों को बिठाया गया है, उनकी समझ और क्षमता ही कम है। इसमे दो राय नहीं कि एक ही ओलंपिक में दो मेडल जीतने वाली अकेली भारतीय शूटर मनु भाकर राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार के सर्वथा योग्य हैं। फिर भी उनका नाम पुरस्कार के लिए नामांकन सूची में न होना खेल प्रेमियों को आहत कर गया। ऐसा क्यों हुआ, जानबूझकर अथवा नासमझी के कारण, इसका जवाब अभी मिलना है। जब मीडिया में यह मामला उलझा तो लीपापोती की जा रही है। मनु भाकर के दुखी पिता ने तो यहां तक कह दिया कि बेहतर है कि लोग अपने बच्चों को खिलाड़ी बनाने की बजाए आईएएस बनाएं। गौरतलब है कि सोमवार को मीडिया रिपोर्ट्स में यह बात सामने आई थी कि 12 सदस्यीय पुरस्कार समिति ने खेल रत्न के लिए जिन नामों की सिफ़ारिश की है, उनमें मनु भाकर का नाम शामिल नहीं है। जबकि इस साल पेरिस में हुए ओलंपिक में मनु भाकर ने 10 मीटर एयर पिस्टल और 10 मीटर मिक्स्ड एयर पिस्टल इवेंट में ब्रॉन्ज़ मेडल जीते थे। साल 2021 में मनु भाकर ने 'बीबीसी इमर्जिंग इंडियन स्पोर्ट्स वुमन ऑफ़ द ईयर 2020' अवॉर्ड जीता था। विवाद बढ़ने पर मनु भाकर ने बयान दिया कि उसका पहला लक्ष्य खेल में ज्यादा से ज्यादा पदक जीतना है न कि खेल रत्न पुरस्कार प्राप्त करना। हालांकि मनु ने यह भी कहा कि संभव है कि उससे मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार के लिए किए गए नामांकन में कुछ त्रुटि हो गई होगी। जिसे अब ठीक कर लिया गया है। वैसे तो इतने नामी खिलाड़ी, जिनकी उपलब्धियां सर्वज्ञात हैं, को पुरस्कार के लिए आवेदन करना पड़े, यह बहुत जंचने वाली बात नहीं है। यूं भी खेल की उपलब्धियां कांच की तरह साफ होती हैं। उन्हीं को आधार मानकर पुरस्कार समिति को निर्णय लेना चाहिए। यही नहीं, सवाल तो पुरस्कार समिति पर भी है। बताया जाता है कि इस बार पुरस्कारों की सिफ़ारिश करने वाली समिति में ओलंपिक खेलने वाला सिर्फ़ एक सदस्य था जबकि सभी ब्यूरोक्रेट्स थे। उन्हें खेल उपलब्धियों की कितनी समझ होगी, समझा जा सकता है। कहा तो यह भी जा रहा है कि मनु पिछले तीन-चार साल से इस पुरस्कार के लिए आवेदन कर रही थी, लेकिन उस पर विचार नहीं किया गया। लेकिन इस बार तो मनु की पुख्ता दावेदारी बनती है। एक चर्चा यह भी है कि ओलंपिक में दो मेडल जीतने के बाद मनु गांधी परिवार से मिली थी, इसलिए भी उसका नाम नामांकन सूची में शामिल नहीं किया। अगर ऐसा है तो यह बहुत संकीर्ण सोच है। खेल पुरस्कारों को भी राजनीतिक दृष्टि से देखना सही नहीं है, क्योंकि खेलों में उपलब्धि राजनीतिक प्रतिबद्धता या जोड़-तोड़ से नहीं मिलती। स्पर्द्धा में जो जीतता है, वह सबके सामने होता है और ऐसा करने के लिए खिलाड़ी को भारी पसीना बहाना पड़ता है, रात-दिन मेहनत करनी होती है, कई बार भौतिक सुखों को भी ताक पर रखना पड़ता है। जरूरत इस बात की है कि खेल पुरस्कारों के लिए चयन की प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और वस्तुनिष्ठ हो ताकि मनु भाकर जैसे अप्रिय विवादों पर लगाम लगे।

नए साल और नए बजट से बंधी बुजुर्गों की उम्मीदें

इनकम टैक्स कानून के अनुसार, सीनियर सिटिज़न्स को दो समूहों में बांटा गया है- सीनियर सिटिज़न्स और सुपर सीनियर सिटिज़न्स। इनमें से प्रत्येक समूह के लिए टैक्स सम्बन्धी क़ानून भी अलग-अलग हैं। सीनियर सिटिज़न्स यानी 60 से 80 साल की उम्र के लोगों के लिए 3 लाख रुपये की इनकम तक टैक्स माफ़ है। सुपर सीनियर सिटिज़न्स यानी 80 साल से ज्यादा उम्र के लोगों के लिए 5 लाख रुपये की इनकम तक टैक्स माफ़ है। रिटायर्ड लोग चाहते हैं कि यह अंतर ख़त्म हो जाए क्योंकि कई लोगों के पास, पेंशन और इन्वेस्टमेंट को छोड़कर इनकम का कोई अन्य साधन नहीं है। उनका मानना है कि सबके लिए 5 लाख रुपये की छूट सीमा तय की जानी चाहिए ताकि सभी सीनियर सिटिज़न्स पर टैक्स का बोझ कम हो सके।

नजरिया

अशोक भाटिया

लेखक आर्थिक विश्लेषक हैं।

नए साल 2025 का आगमन कई उम्मीदों के साथ होगा। ऐसे में आगामी बजट से वरिष्ठ नागरिकों को खास उम्मीदें हैं। पिछले साल पेश बजट में वित्तमंत्री ने सीनियर सिटीजंस के लिए कोई बड़ा ऐलान नहीं किया था। इसलिए सीनियर सिटीजंस को आने वाले बजट से ज्यादा उम्मीदें हैं,ताकि उन्हें पता चल सके कि उनके बटुए में और ज्यादा पैसे आएंगे या नहीं। इस समय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने 2025 के बजट पर काम शुरू कर दिया है सो अभी से सीनियर सिटीजन ने अपनी तकलीफों व मांग को लेकर चर्चा शुरू कर दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों और इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स से मुलाकात की है। इस मुलाकात के दौरान पीएम आने वाले यूनियन बजट 2025 के लिए उनकी राय और सुझाव लिए हैं। दुःख इस बात का है कि किसी भी सीनियर सिटीजन को उनकी तकलीफों व राय जानने के लिए नहीं बुलाया जाता।

इनकम टैक्स क़ानून के अनुसार, सीनियर सिटिज़न्स को दो समूहों में बांटा गया है - सीनियर सिटिज़न्स और सुपर सीनियर सिटिज़न्स। इनमें से प्रत्येक समूह के लिए टैक्स सम्बंधी क़ानून भी अलग-अलग हैं। सीनियर सिटिज़न्स यानी 60 से 80 साल की उम्र के लोगों के लिए 3 लाख रुपये की इनकम तक टैक्स माफ़ है। सुपर सीनियर सिटिज़न्स यानी 80 साल से ज्यादा उम्र के लोगों के लिए 5 लाख रुपये की इनकम तक टैक्स माफ़ है। रिटायर्ड लोग चाहते हैं कि यह अंतर ख़त्म हो जाए क्योंकि कई लोगों के पास, पेंशन और इन्वेस्टमेंट को छोड़कर इनकम का कोई अन्य साधन नहीं है। उनका मानना है कि सबके लिए 5 लाख रुपये की छूट सीमा तय की जानी चाहिए ताकि सभी सीनियर सिटिज़न्स पर टैक्स का बोझ कम हो सके।मौजूदा टैक्स स्लैब के अनुसार, सीनियर सिटिज़न्स को अलग-अलग रेट के हिसाब से टैक्स देना पड़ता है।

सीनियर सिटीजंस को उम्मीद है कि वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण हेल्थ इंश्योरेंस के प्रीमियम पर डिडक्शन बढ़ा सकती हैं। अभी 60 साल और इससे ज्यादा उम्र के लोगों को हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी के प्रीमियम पर सालाना 50,000 रुपये डिडक्शन की इजाजत है। बुजुर्गों का कहना है कि पिछले कुछ सालों में खासकर कोविड की महामारी के बाद हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी का प्रीमियम काफी बढ़ गया है। इसलिए सरकार को 50,000 रुपये के डिडक्शन को बढ़ाकर कम से कम एक लाख रुपये कर देना चाहिए। इससे उन पर टैक्स का बोझ घटेगा।

सीनियर सिटिज़न्स पर महंगाई का ज्यादा असर पड़ता है। उनके इनकम के साधन सीमित और अक्सर निश्चित होने के कारण, बढ़ती महंगाई के कारण सीधे तौर पर उनकी खरीदने की ताकत कम हो सकती है। उनके पास महंगाई से लड़ने के लिए अपने इनकम को बढ़ाने का कोई तरीका नहीं

भी हो सकता है। इसलिए, सरकार उन्हें अधिक से अधिक, महंगाई को मात देने वाले सेविंग्स और इन्वेस्टमेंट ऑप्शंस देने के बारे में सोच सकती है। वर्तमान में, सीनियर सिटिज़न्स सेविंग्स स्कीम में 30 लाख रुपये तक इन्वेस्ट किया जा सकता है जिस पर 8.2 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से सुनिश्चित रिटर्न मिलता है। सरकार इस सीमा को बढ़ाने, ज्यादा रेट ऑफ़ रिटर्न देने और एक कम लॉक-इन फिक्स करने के बारे में सोचना चाहिए। इससे सीनियर सिटिज़न्स की खरीदने की ताकत बढ़ जाएगी और उन्हें बेहतर लिक्विडिटी मिल पाएगी।

कई सीनियर सिटीजन की मांग है कि उन्हें चालू ब्याज से 2 प्रतिशत अतिरिक्त ब्याज मिलना चाहिए। वसई पूर्व सीनियर सिटीजन एसोसिएशन के आनंद बोंगिरवार के अनुसार सरकार वरिष्ठ नागरिको का बँक मे जमा पूँजी की पुरी राशी की सुरक्षा की गारंटी करें इसे 5 लाख की सीमा में लॉक अप न किया जाय। देश में चल रहे सभी विमान सेवा नागरिकों को 50 प्रतिशत डिस्काउंट प्रदान किया जाये, विमान सरकारी हो यां गैर सरकारी। इस समय पारिवारिक पेंशन के लिये 80 लाख लोग पेंशन के लिये लगातार संघर्ष कर रहे है सभी वरिष्ठ नागरिक को पेंशन प्रदान किया जाय क्योकि उन्होंने अपने जीवन काल मे बहुत ही कम पैसे मे गुजर किया था और महंगाई बढ़ने पर उनकी जमा पूंजी में कमी हो गई हैं। इसी प्रकार सीनियर सिटीजन को दांतों की बीमारी के लिए इनकम टैक्स में कोई छूट नहीं मिलती। नकली दाँत बनवाने, और दांतों का इलाज करने की इनकम टैक्स में छूट दी जावे। दांतों के इलाज़ में एक बड़ी धनराशि ख़र्च होती है। मोदी सरकार ने चुनाव के पहले वायदा किया था कि 70 वर्ष से ऊपर के हर वर्ग के सीनियर सिटीजन को आयुष्मान कार्ड दिया जाएगा वह कार्यान्वित तो हो रहा है पर सीनियर सिटीजन कि मांग है कि उम्र सीमा घटा कर 70 से 60 वर्ष की जाय तथा यह आयुष्मान कार्ड गिने चुने सरकारी हॉस्पिटल में काम आता है, यदि यह सभी प्राइवेट हॉस्पिटल में भी लागू हो तो इसकी सार्थकता होगी।

कोविड से पहले तक सीनियर सिटीजन को ट्रेन टिकट पर 40 से 50 फीसदी तक की छूट दी जाती थी लेकिन ये छूट कोविड के समय खत्म कर दी गई। कोविड का डर देश और दूनिया में खत्म होने के बाद भी सरकार ने इस छूट को फिर से शुरू नहीं किया है। अब सीनियर सिटीजन बजट में ट्रेन टिकट पर 50 फीसदी तक की छूट दिये जाने की डिमांड कर रहे हैं। वह उम्मीद कर रहे हैं कि सरकार उन्हें ये छूट फिर से देना शुरू करेंगे।गौरतलब है कि आईआरसीटीसी सीनियर सिटीजन के लिए स्पेशल एक्सप्रेस ट्रेनों की सभी केटेगरी में रियायती किराए ऑफर करता था। आईआरसीटीसी साल 2019 के अंत तक 60 साल से अधिक उम्र के सीनियर सिटीजन और 58 साल या उससे अधिक उम्र की महिला बुजुर्ग यात्रियों को दुरंतो, शताब्दी, जन शताब्दी, राजधानी, मेल और एक्सप्रेस ट्रेनों के ट्रेन टिकटों पर किराए में छूट देता था। जहां पुरुष वरिष्ठ नागरिक 40 प्रतिशत की रियायत के पात्र थे, वहीं महिला वरिष्ठ नागरिक ट्रेन टिकट पर 50 प्रतिशत की छूट का लाभ उठा सकती थी। साल 2019 के अंत तक सीनियर सिटीजन को ट्रेनों की टिकट की कीमत पर 40 से 50 फीसदी तक की छूट मिली थी। अगर राजधानी का फर्स्ट एसी का टिकट 4,000 रुपये है तो सीनियर सिटीजन को 2,000 या 2,300 रुपये में मिलता था। फिर साल 2019 के अंत और साल 2020 की शुरुआत में कोविड देश और पूरी दुनिया में फैल गया जिसके बाद आईआरसीटीसी की टिकट बुकिंग विंडो पर ये सर्विस मिलनी बंद हो गई। अब सीनियर सिटीजन उम्मीद कर रहे हैं कि बजट में उन्हें ये खास छूट फिर से मिलेगी। सरकार को ऐसे सीनियर सिटीजंस को घर के किराए पर टैक्स डिडक्शन देना चाहिए, जिनकी रेगुलर इनकम नहीं है। इससे बुजुर्गों पर टैक्स का बोझ कम होगा। उन्हें उम्मीद है कि वित्तमंत्री इस बार बजट में उनकी यह मांग पूरी करेंगी।

वर्तमान में, मूल कर छूट सीमा वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक आयु) के लिए 3 लाख रुपये और बहुत वरिष्ठ नागरिकों (80 वर्ष से अधिक आयु) के लिए 5 लाख रुपये है। यह वह सीमा है जिस तक वरिष्ठ नागरिक की आय पर कर नहीं लगता है। अब, मांग यह है कि बजट में नई कर व्यवस्था में वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक) के लिए मूल कर छूट सीमा को 3 लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये किया जाना चाहिए, जो कि बहुत वरिष्ठ नागरिकों (80 वर्ष से अधिक) के समान है।

वरिष्ठ नागरिक आगामी 2025 बजट में संभावित बोनस योजनाओं और कर प्रोत्साहनों को लेकर आशान्वित हैं। यह उम्मीद बुजुर्ग आबादी के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहायता की आवश्यकता पर आधारित है। वरिष्ठ नागरिकों के लिए तैयार किए गए बोनस धन का सीधा इंजेक्शन प्रदान कर सकते हैं, जिससे स्वास्थ्य देखभाल, दैनिक जीवन और अन्य आवश्यक खर्चों से जुड़ी बढ़ती लागत को संबोधित करने में मदद मिलेगी। इससे न केवल वरिष्ठ नागरिकों की वित्तीय सुरक्षा बढ़ेगी बल्कि समाज में उनके योगदान को भी मान्यता मिलेगी।

कर्मचारियों की कमी से जूझती शासन व्यवस्था

प्रशासन

प्रियंका सौरभ

लेखक स्तंभकार हैं।

भारतीय शासन व्यवस्था को अक्सर 'लोगों की कमी' लेकिन 'प्रक्रियाओं की कमी' के रूप में वर्णित किया जाता है, जो कि प्रभावी शासन के लिए उपलब्ध बड़ी प्रशासनिक मशीनरी और सीमित मानव संसाधनों के बीच असंतुलन को दर्शाता है। जबकि नौकरशाही प्रक्रियाएँ अच्छी तरह से स्थापित हैं, कर्मियों की कमी कुशल कार्यान्वयन में बाधा डालती है। यह विरोधाभास देरी, अक्षमताओं और अपर्याप्त सार्वजनिक सेवा वितरण का कारण बनकर शासन को प्रभावित करता है, जिससे नागरिकों की जरूरतों के प्रति राज्य की जवाबदेही कम होती है। शासन व्यवस्था को 'लोगों की कमी' लेकिन 'प्रक्रियाओं की कमी' के रूप में वर्णित किया जाता है। भारतीय राज्य में प्रति व्यक्ति सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारियों की संख्या कम है, जिसके परिणामस्वरूप जटिल शासन चुनौतियों का समाधान करने के लिए कर्मियों की कम उपस्थिति है। भारत में प्रति मिलियन केवल 1,600 केंद्रीय सरकारी कर्मचारी हैं, जबकि अमेरिका में प्रति मिलियन 7,500 हैं, जिससे राज्य की दक्षता प्रभावित होती है। कम सिविल सेवकों के बावजूद, नौकरशाही लाइसेंसिंग, परमिट और मंजूरी जैसी जटिल प्रक्रियाओं में फंसी हुई है। व्यवसाय शुरू करने के लिए मंजूरी, परमिट और अनुमोदन की भूलभुलैया से गुजरना पड़ता है जो प्रगति में बाधा डालते हैं और परिणामों में देरी करते हैं। भारतीय राज्य में स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और पुलिसिंग जैसे प्रमुख क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में कुशल पेशेवरों की कमी है। भारतीय रिजर्व बैंक के पास केवल 7,000 कर्मचारी हैं, जबकि अमेरिकी फेडरल रिजर्व में 22,000 कर्मचारी हैं, जो राष्ट्रीय वित्तीय स्थिरता के प्रबंधन में प्रभावशीलता को सीमित करता है। नीति-निर्माण अत्यधिक केंद्रीकृत है, लेकिन कार्यान्वयन सीमित फ्रंटलाइन कर्मियों द्वारा की जाने वाली एक बोझिल प्रक्रिया बनी हुई है।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण परियोजनाओं को क्रियान्वित करता है, जबकि नीति निर्माण मंत्रालय स्तर पर रहता है, जिससे देरी और लागत में कमी आती है। सरकारी कर्मचारियों का छोटा आकार अधिकारियों पर अत्यधिक बोझ डालता है, जिससे प्रभावी नीति निष्पादन मुश्किल हो जाता है। अपर्याप्त जनशक्ति और अत्यधिक प्रक्रियाओं के कारण सेवाओं में देरी होती है, क्योंकि अधिकारी काम की मात्रा को संभालने के लिए संघर्ष करते हैं। बोझिल विनियामक मंजूरी और अग्रिम पंक्ति के निर्णय लेने वाले प्राधिकरण की कमी के कारण बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं को लागत में वृद्धि और देरी का सामना करना पड़ता है।

नीति निर्माण और निष्पादन का विभाजन निर्णय लेने वालों और सेवा कार्यान्वयनकर्ताओं के बीच एक वियोग पैदा करता है, जिससे खराब प्रदर्शन के लिए जवाबदेही कम हो जाती है। जब सड़क निर्माण परियोजनाओं में समस्याएँ आती हैं, तो मंत्रालयों और कार्यान्वयनकर्ताओं के बीच निगरानी के लिए स्पष्ट ज़िम्मेदारी की अनुपस्थिति के कारण दोषारोपण और अक्षमताएँ होती हैं। सरकार के भीतर कौशल की कमी के कारण महत्वपूर्ण कार्यों के लिए निजी परामर्श फर्मों पर निर्भरता बढ़ जाती है, जिससे सार्वजनिक व्यय बढ़ जाता है। भारत सरकार ने उन कार्यों के लिए परामर्श शुल्क पर 500 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए, जिन्हें बेहतर प्रशिक्षित अधिकारियों के साथ घर में ही प्रबंधित किया जा सकता था। नौकरशाही की जटिल प्रक्रियाएँ जोखिम लेने और विवेकाधीन निर्णय लेने से परहेज़ पैदा करती हैं, जिससे नवाचार बाधित होता है और अनुकूलन धीमा होता है। उच्च सार्वजनिक क्षेत्र के वेतन और नौकरी की सुरक्षा के साथ प्रोत्साहनों का गलत संरेखण ऐसे लोगों को आकर्षित करता है जो सामाजिक सेवा के बजाय वित्तीय लाभ से प्रेरित होते हैं। लोगों की कमी को दूर करने के लिए विभिन्न स्तरों पर योग्य पेशेवरों की भर्ती बढ़ाएँ, जिससे कुशल कार्यबल सुनिश्चित हो। मिशन कर्मयोगी जैसे पार्श्व प्रवेश कार्यक्रम और विशेष प्रशिक्षण पहल सिविल सेवकों के कौशल और दक्षता में सुधार कर सकते हैं। कार्यान्वयन से संबंधित निर्णय लेने, जवाबदेही में सुधार और प्रक्रियाओं को गति देने के लिए प्रत्यायोजित अधिकार के साथ फ्रंटलाइन कर्मियों को सशक्त बनाएँ। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के समान नीतियों को क्रियान्वित करने में फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं को अधिक नियंत्रण देने से देरी कम होती है और दक्षता में सुधार होता है।

लाइसेंस और मंजूरी के बोझ को कम करने के लिए नौकरशाही प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करें, जिससे नागरिकों और व्यवसायों के लिए सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच आसान हो। परमिट और अनुमोदन के लिए वन-स्टॉप समाधान प्रदान करने वाले ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म जटिलता को कम कर सकते हैं और प्रक्रियाओं को गति दे सकते हैं। मध्यम वेतन सुधार लागू करें जो सार्वजनिक क्षेत्र के वेतन को निजी क्षेत्र के मुआवजे के साथ संरेखित करते हैं, भ्रष्टाचार को हतोत्साहित करते हैं और सामाजिक सेवा से प्रेरित व्यक्तियों को आकर्षित करते हैं। प्रदर्शन से जुड़े प्रोत्साहनों को लागू करना और प्रतिस्पर्धी, लेकिन उचित वेतन सुनिश्चित करना सामाजिक सोच वाले पेशेवरों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के आकर्षण को बढ़ा सकता है। निरीक्षण और जवाबदेही तंत्र को मजबूत करें- नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक और केंद्रीय सतर्कता आयोग जैसी एजेंसियों में सुधार करें ताकि ऑडिट और जांच को अधिक प्रासंगिक बनाया जा सके और केवल अनुपालन के बजाय नीति उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। निरीक्षण एजेंसियों को नीतिगत निर्णयों की जटिलताओं के प्रति संवेदनशील बनाने से यह सुनिश्चित होगा कि वे संदर्भ को समझें, जिससे मुकदमेबाजी और परियोजना निष्पादन में देरी कम होगी।. भारत के 'लोगों की संख्या कम' लेकिन 'प्रक्रियाओं की संख्या अधिक' होने के कारण शासन में अधिक जवाबदेही और दक्षता की आवश्यकता है। मानव संसाधनों को मजबूत करना, निर्णय लेने को विकेंद्रीकृत करना और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना सार्वजनिक सेवा वितरण को सुव्यवस्थित कर सकता है, जिससे बेहतर पहुंच और जवाबदेही सुनिश्चित हो सकती है। भविष्य-केंद्रित दृष्टिकोण को क्षमता निर्माण और पारदर्शिता पर जोर देना चाहिए, जिससे अधिक जन-केंद्रित और प्रभावी शासन प्रणाली को बढ़ावा मिले।

राजनेताओं की भिन्न-भिन्न श्रेणियों पर एक नजर

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

वर्तमान दौर में राजनेताओं को जुझारू, दबंग, कद्दावर और संघर्षशील नेता के तौर पर महिमामंडित किया जाता है। ऐसे संबोधन को नेता लोग काफी पसंद भी किया करते हैं। अपने नेता की दबंगई को लेकर समर्थक एवं कार्यकर्ता भी बहुत उत्साहित नजर आते है। जिसके चलते नेता की ख्याति (?) का लाभ सीधे तौर पर उन्हें मिला करता है। वैसे राजनीति में हर एक नेता दबंग नहीं होता, कोई चिंतक, विचारक और नीति नियमों का पालनकर्ता भी हो सकता है, लेकिन ऐसे नेता के निर्वाचन क्षेत्र में आमतौर पर उपलब्धियों की कोई बड़ी सौगात नहीं मिला करती। दरअसल आम नागरिक भी चाहते हैं कि उनका नेता ऐसा हो जो जैसा जी चाहे वैसा कर सकता हो। प्रशासन तंत्र पर उसका ऐसा दबदबा हो, कि कोई उसकी मंशा के विपरीत न जा सके।

राजनीति के बदलते ट्रेंड के अनुसार तेजतर्रार नेता के क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की तुलना में विकास कार्यों की अधिकता नजर आती है। वैसे भी अब वह जमाना नहीं रहा जब धीर गंभीर राजनेता जन समूह में सम्मान पाया करते थे। अब तो स्थिति यह है कि जिसकी ऊपर तक पहुंच हो, वही चाहे तो क्षेत्र का भला कर सकता है। अन्यथा सीधा-सच्चा नेता न तो अपने वालों का भला कर पाता है न दूसरों का भला कर पाता है। ऐसी सोच जो जनमानस में व्याप्त हो गई है, यही एक ऐसा कारण है कि राजनीति में धनबल के साथ बाहुबल की भी महत्ता बढ़ती चली जा रही है। यह एक विचारणीय प्रश्न है कि जुझारू और संघर्षशील तो ठीक, लेकिन यह दबंग और कद्दावर का क्या मतलब है? यह कैसी उपाधि है, जो राजनेताओं के इतराने का कारण बन जाती है?

वैसे विसंगतियों के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ने वाला जुझारू कहा जा सकता है और अपनी नीति और सिद्धांतों पर अडिग रहकर चुनौतियों का सामना करने वाला संघर्षशील कहा जा सकता है। लेकिन यह दबंग और कद्दावर का क्या मतलब है? बोलचाल की भाषा में दबदबा रखने वाला और ऊंची पहुंच रखने वाला दबंग या कद्दावर नेता कहा जाता है। सरकारी कार्य के ढर्रे को देखते हुए आम नागरिकों की भी यही चाहत होती है कि उनके क्षेत्र का निर्वाचित प्रतिनिधि दबंग या कद्दावर हो। ताकि जन समस्याएं आसानी से सुलझ सकें और विकास कार्यों की सौगात निरंतर क्षेत्र को मिलती रह सके। आमतौर पर सीधे-सच्चे जनप्रतिनिधि इस मामले में फिसड्डी साबित होते रहे हैं। यही कारण है कि आम नागरिक दबंग और कद्दावर नेता के प्रति अपना विशेष रुझान रखने लगे हैं।

यह जरूर है कि दबंग एवं कद्दावर राजनेता को अपनी राजनीति से ही सीधा मतलब होता है। ऐसे में नजदीकी समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं को मनमानी करने की छूट भी मिल जाया करती है। हालांकि सभी राजनेता ऐसे नहीं होते, लेकिन अधिकांश ऐसे ही होते है, इस तथ्य एवं सत्य से अब आम नागरिक भी पूरी तरह अपरिचित नहीं रहे हैं। कहीं-कहीं तो अपनी फेंकफांक के आधार पर समर्थकों द्वारा शासन प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे विकास कार्यों में सीधे तौर पर भागीदारी भी की जाने लगी है। आमतौर पर छोटे बड़े ठेकों में भी समर्थक हाथ बंटाने लगे हैं। हालांकि आम नागरिकों को इससे कोई सीधा मतलब नहीं होता कि किसका ठेका किसके पास है? उनका मतलब महज आम खाने से होता है। व्यवहार में देखा गया है कि दबंग एवं कद्दावर नेता का इलाका सर्व सुविधा युक्त रहा करता है।

एक बात यह भी है कि हर किसी सरकारी काम का अपना एक बंधा बंधाया ढर्रा है। जिसमें छोटे से छोटा काम भी कोई आसान नहीं है। एक सिस्टम है जो सिस्टम के साथ ही काम करता है। उस सिस्टम को समझना आम आदमी के बूते के बाहर की बात होती है। ऐसी स्थिति में अधिकारी और कर्मचारियों की पौ बारह हो जाती है। हर कोई अपेक्षा करने लगता है कि इसमें मेरा क्या? अब तो यह भाव कुछ इस कदर विस्तार पा गया है कि अलग-अलग विभागों में एक बंधी बंधाई धारा के अनुरूप ही किसी कार्य को पूर्ण किया जा सकता है। यह स्थिति नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे हर तरफ व्याप्त है। इस विषयक जिम्मेदार जानकर भी अनजान बनने का स्वांग रचा करते हैं। ऊपरी तौर पर नीति नियम की कितनी ही बातें कही जाती हो, लेकिन हकीकत कुछ और होती है।

यही कारण है कि आम नागरिकों के मन में यह चाहत होती है कि उनका निर्वाचित प्रतिनिधि दबंग और कद्दावर हो, ताकि उनके क्षेत्र की बुनियादी आवश्यकताओं की तत्काल आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त विकास कार्य की श्रृंखला भी उनके क्षेत्र में अनवरत रूप से जारी रह सके। उनके क्षेत्र के काम किसी भी सरकारी नियमों की जटिलता के चलते उलझ कर नहीं रह जाएं। विभिन्न सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने कार्य क्षेत्र में अनावश्यक रूप से अफसरशाही या लालफीताशाही का परिचय न देवें। यही वे कारण है, जिसके चलते राजनीति में दबंग चेहरों की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है। व्यवहार में देखा गया है कि किसी की निहायत ही व्यक्तिगत समस्या का निराकरण भी ऐसे दबंग एवं कद्दावर नेता के हस्तक्षेप से चुटकियों में हो जाया करता है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लोकतंत्र से लट्ठतंत्र की ओर अग्रसर हम

व्यंग्य

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

लाठी से लड़ने वाले को लठैत या लट्ठबाज कहा जाता है। ये लाठी चलाने में विशेषज्ञ की हैसियत रखते हैं। पहले लड़ाई झगड़ों में इन्हें किराये पर बुलाया जाता था।ये हायर करने वाले को उसका अच्छा रिटर्न भी देते थे।एक एक लठैत दसियों को धूल चटा देता था।गांव देहातों में इनकी बड़ी धूम है। घर का बंटवारा हो, किसी का खेत जोतना हो, बगलवाले की जमीन पर मकान बनाना हो, पड़ोसी का हिसाब चुकता करना हो तो इनकी ज़रूरत पड़ ही जाती है। इससे गैरकानूनी काम में भी क़ानून अपनी टांग नहीं अड़ता। वैसे भी लट्ठ हमारी प्राचीन संस्कृति का अविभाज्य अंग है। कहा भी जाता है जिसकी लाठी उसकी भैंस। लोकतंत्र में लट्ठ गाँधी जी की लाठी की तरह नब्बे डिग्री पर खड़ा रहता है। मजबूत हाथों का सहारा लिये हुए जिसे देखकर ही कमजोर दिल वालों की फूंक सरक जाती है। कुछ तो दर्शन मात्र से अपने पर्चे की वापिसी के लिए निर्वाचन कार्यालय की दौड़ लगा देते हैं। इससे लोकतंत्र मेरा मतलब लट्ठतंत्र के बैठने या लेटने की नौबत कभी नहीं आती।

आज़ादी के बाद देश का विकास हुआ हो अथवा न हुआ हो परन्तु लोकतंत्र को विकास के सोपानों पर चढ़ने से कोई नहीं रोक सका। सभी राजनीतिक दलों और उनके प्रमुख सेवादारों ने मूक समर्थन के साथ सामूहिक रूप से लोकतंत्र को विकसित करने का बीड़ा उठा लिया है। इसी का सुपरिणाम है कि हम अब लोकतंत्र से लट्ठतंत्र की ओर अग्रसर हैं। पहले चुनावों में बूथ लूटे जाते थे।मुंह पर फेंटा लगाये बंदूकधारी हायर करने पड़ते थे।अब ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता और बंगाल के जादू की तरह खेल या खेला हो जाता है।

समय और विज्ञान की प्रगति के साथ बहुत से नए तरीके चल निकले है। जहां-जहां विरोधी प्रत्याशी भारी पड़ता है वहाँ उसे या उसके वज़नदार कट्टर समर्थक की लाटरी खुलवाने या उसे जीते जी परमधाम पहुंचाने की सेवायें शुरू हो गई हैं। बस स्थानीय स्तर पर कल्याणकारी व्यक्ति प्रशासन की नाक में नकेल डालने वाले दल से जुड़ा हो।या यूं कहें प्रशासन मेहरबान तो ई वी एम पहलवान।

लट्ठ के प्रताप से ही हर चुनाव में मतदान के बाद सरकारी गाड़ियों में ई. वी.एम मशीनें पाई जाती हैं। होने को ये रिज़र्व वाली होती हैं खाली ,मगर बात का बतंगड़ बनाने वाले विरोधी इसे बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करने में देर नहीं करते। विशेष रूप से सोशल मीडिया पर। जिस चुनाव में ये कहीं नहीं मिलतीं वहां पुरानी वीडियो क्लिप चलाकर काम चलाया जाता है। अब ये भी ई. वी. एम. जितनी रहस्यमयी बात है कि ऐसा सत्तारूढ़ दल को सुखी व संतुष्ट करने के लिए होता है या खामखां बदनाम करने के लिए हर बार, बार-बार यही कहानी क्यों सामने आती है?

चुनाव में सरकारी कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाता है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है? वे ई.वी.एम. की महत्ता को भी समझते हैं। फिर भी वे उसे अपनी सरकारी गाड़ी में भरकर इधर-उधर घूमते रहते हैं। कोई घर खाना खाने आ जाता है तो कोई थकान से परेशान होकर होटल में आराम करने। वास्तव में ये सेक्टर प्रभारियों को मतदान केन्द्र पर ईवीएम खराब होने की दशा में बदलने के लिए दी जाती हैं किन्तु वे इसे अपनी प्राइवेट प्रोपर्टी समझकर तफरीह करते रहते हैं। सरकारी आदमी हैं ना इसलिए इनका रूट बदलकर इधर उधर होना शक़ पैदा करता है मगर वे कहते हैं कि बीमार आदमी क्या डॉक्टर को दिखाने भी न जाये अगर उनकी वजह से लोकतंत्र की सेहत खराब हो रही हो तो हो जाये वो क्या उसके लिए मर जायें।

इधर नए भारत में लट्ठ या लट्ठबाजी भी रूप परिवर्तन को बाध्य हुई है। गठबंधन में एक दल दस सीट मांगे और उसे एक भी सीट न देकर जबर दल अपने प्रत्याशियों की सूची जारी कर दे तो इसे भी लट्ठमारी ही कहा जायेगा। जिसे मंत्रीमंडल की आस हो और जगह न मिले तो वह भी बिना लट्ठ मारे जमीन सूंघता दिखाई देता है। किसी सरकारी विभाग द्वारा पैसे खाने वाले पत्रकारों की गोपनीय सूची जारी करना भी लट्ठमारी का बेहतरीन उदाहरण है। और ये कुछ भी नहीं है झलकी मात्र है। सौ साल पूरे होने दीजिये फिर देखिये कि लट्ठमारी के कैसे-कैसे उदाहरण सामने आते हैं।

विचार

जवाहर चौधरी
लेखक साहित्यकार हैं।

किताबें खूब छप रही हैं लेकिन पढ़ने वाले हैं नहीं

नवोदितजी के तीन बच्चे हैं और तीनों अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे हैं। उनके बच्चे पैंतालीस-पचपन नहीं समझते हैं, फोर्टी फाइव-फिफ्टी फाईव कहना पड़ता है। इस स्थिति पर नवोदितजी को, जब वे घर पर अकेले होते हैं, गर्व भी है कि बच्चों का भविष्य बन रहा है। हासिल ये कि जिन्हें शिकायत है उन्हीं के घर से हिंदी बेदखल है। उम्मीद सारी जमाने से है। अभी तक कहा जाता था कि भगतसिंग सबको पसंद है पर पड़ौसी के घर में। अब हिंदी के लिए भी यही होता दिख रहा है। हमारा किसान भले ही अनपढ़ क्यों न हो लेकिन अगली फसल के लिए थोड़ा बीज बचा कर रखता है। किन्तु लेखकों ने साहित्य को सींचा पर भाषा की भ्रूण हत्या में शामिल हो गए। हरेक को सरकारी या कार्पोरेट नौकरियों में बच्चों की सुरक्षा दिख रही है। पैसा पहले, करियर बड़ा टारगेट, भाषा साहित्य का क्या है, दूसरे सम्हालें। वो कहानी है ना जिसमें हर आदमी चुपके से दूध की जगह पानी डाल आता है, यह सोचते हुए कि बाकी तो दूध डालेंगे ही। स्कूल वही प्राथमिकता में होते हैं जो अंग्रेजी पर भारी दबाव रखते हैं और हिंदी बोलने पर प्रतिबंध और जुर्माना भी लगाते हैं। रही सही कसर घरों में निकल जाती है। राजधानियों, महानगरों में हिंदी 'महरी की भाषा' है, लिहाजा घरों में भी अंग्रेजी का जोर है। ड्राइंग रूम में बुक-केस की ओर देखें तो अंग्रेजी साहित्य दिखाई देता है। हिंदी साहित्य की किताबें रखने वाले पुराने बुकशॉप तो लगता है बंद ही हो गए। कहीं कोई होता भी है तो वहाँ भी देसी-विदेशी अंग्रेजी लेखकों की किताबें सजी हैं और बिक भी रही हैं। एक साहब ने बताया कि उन्हें मजबूरन हिंदी की किताबों पर कवर चढ़ा कर रखना पड़ता है।

अनेक लेखक जिन्हें टेबल पर होना चाहिए, नारायण-नारायण करते हिंदी साहित्य के व्योम मार्ग में विचरण करते दिखाई दे रहे हैं। देवगण भी अपनी सत्ताओं-सेनाओं के साथ वो सब करने में व्यस्त हैं जिसका प्रायः वे ही विरोध करते रहे हैं। एक पीढ़ी है जिसने साहित्य के बड़े संसार को रचने में अपना योगदान दिया। साहित्य का इतिहास खंगालेंगे तो वे उसमें दर्ज भी मिलेंगे। भगवान आज बुला भी ले तो भी उन्हें कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन चढ़ी हुई पतंग ऐसे ही कोई कैसे छोड़ सकता है। उड़ रही है तो उड़ने दो मजे में। कहीं किसी बहस-गोष्ठी में नवोदित चिंता करने लगते हैं कि हिंदी का पाठक गुम हो रहा है तो उन्हें सुनना ही पड़ता है। किताबें छप तो बहुत रही हैं लेकिन पढ़ने वाले दिखाई नहीं दे रहे हैं। आप वरिष्ठों ने लिखा तो हमने पढ़ा, अब हम लिख रहे हैं तो कड़ी आगे जुड़ नहीं रही है। यही हाल रहे तो हमें पुस्तकालयों में ही सड़ जाना पड़ेगा! वो तो भला हो कमीशनखोरों का जो खरीद रहे हैं, वरना पुस्तकालय भी नसीब नहीं होता। सबका बाज़ार है एक हिंदी साहित्य का ही नहीं बन पा रहा है।

नवोदितजी के तीन बच्चे हैं और तीनों अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे हैं। उनके बच्चे पैंतालीस-पचपन नहीं समझते हैं, फोर्टी फाइव-फिफ्टी फाईव कहना पड़ता है। इस स्थिति पर नवोदितजी को, जब वे घर पर अकेले होते हैं, गर्व भी है कि बच्चों का भविष्य बन रहा है। हासिल ये कि जिन्हें शिकायत है उन्हीं के घर से हिंदी बेदखल है। उम्मीद सारी ज़माने से है। अभी तक कहा जाता था कि भगतसिंग सबको पसंद है पर पड़ौसी के घर में। अब हिंदी के लिए भी यही होता दिख रहा है। हमारा किसान भले ही अनपढ़ क्यों न हो लेकिन अगली फसल के लिए थोड़ा बीज बचा कर रखता है। किन्तु लेखकों ने साहित्य को सींचा पर भाषा की भ्रूण हत्या में शामिल हो गए। हरेक को सरकारी या कार्पोरेट नौकरियों में बच्चों की सुरक्षा दीख रही है। पैसा पहले, करियर बड़ा टारगेट, भाषा साहित्य का क्या है, दूसरे सम्हालें। वो कहानी है ना जिसमें हर आदमी चुपके से दूध की जगह पानी डाल आता है, यह सोचते हुए कि बाकी तो दूध डालेंगे ही। स्कूल वही प्राथमिकता में होते हैं जो अंग्रेजी पर भारी दबाव रखते हैं और हिंदी बोलने पर प्रतिबंध और जुर्माना भी लगाते हैं। रही सही कसर घरों में निकल जाती है। राजधानियों, महानगरों में हिंदी 'महरी की भाषा' है, लिहाजा घरों में भी अंग्रेजी का जोर है। ड्राइंग रूम में बुक-केस की ओर देखें तो अंग्रेजी साहित्य दिखाई देता है। हिंदी साहित्य की किताबें रखने वाले पुराने बुकशॉप तो लगता है बंद ही हो गए। कहीं कोई होता भी है तो वहाँ भी देसी-विदेशी अंग्रेजी लेखकों की किताबें सजी हैं और बिक भी रही हैं। एक साहब ने बताया कि उन्हें मजबूरन हिंदी की किताबों पर कवर चढ़ा कर रखना पड़ता है।

कुछ का मानना है कि सम्भावना गाँव और कस्बों में है। वहाँ भारतीय संस्कृति अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। हालांकि टीवी, इंटरनेट, मोबाईल, फटी जींस जैसी चीजें वहाँ पहुँच चुकी हैं। बात कुछ गरीबी की है कुछ संसाधनों की भी और सबसे बड़ी बात सोच की। स्कूल सरकारी हैं, बच्चे हिंदी बोलते हैं, हिंदी में पढ़ते हैं और घर परिवार में भी हिंदी है। आशावादी राहत के साथ बताते हैं कि हिंदी का पाठक यहाँ बसता है और भविष्य में हिंदी के लेखक भी यहीं से मिलेंगे। फौरीतौर पर कुछ उम्मीद जागती है। लेकिन हाल ही में एक संस्था के सर्वेक्षण से जो तथ्य सामने आये हैं वे उम्मीदों पर पानी फेरने वाले हैं। चौदह से अठारह साल के आठवीं कक्षा पास बच्चों में से एक चौथाई हिंदी की एक पंक्ति भी नहीं पढ़ पाते हैं। कई तो अपना नाम तक सही नहीं लिख पाते हैं! जबकि उनकी मातृभाषा और शिक्षा का माध्यम हिंदी ही है। आधे से अधिक गणित का मामूली सा सवाल भी हल करने में सक्षम नहीं हैं। दुनिया के नक्शे में भारत कहाँ है यह बीस प्रतिशत को पता नहीं। अधिकांश पलकों को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि बच्चे स्कूल जा रहे हैं या नहीं। साफ है कि शिक्षा उनकी प्राथमिकता में नहीं है। कुछ तो यह मानते हैं कि बच्चों को पढ़ा दो तो वे किसी काम के नहीं रहते हैं, नौकरी मिलती नहीं और खेती में मेहनत के काम वे करना पसंद नहीं करते। कहते हैं कि हर माह लाखों युवा रोजगार की तलाश में बाहर निकलते हैं लेकिन खराब शिक्षा के कारण उनकी तलाश अंतहीन बनी रहती है। देश में शिक्षा कभी राजनीतिक मुद्दा नहीं बनी। लोकतंत्र गरीबी के नाम पर ही पचहत्तर साल का हो गया। खराब हालात भ्रष्टाचार के लिए उर्वरा भूमि होते हैं। शिक्षा पर भारी बजट तो होता है लेकिन गुणवत्ता की ओर हमारा ध्यान नहीं होता है। पैसा आ रहा है और जहाँ उसे जाना है, जा रहा है। पिछले दिनों सोशल मिडिया पर एक वडियो चला था जिसमें कस्बाई स्कूलों के शिक्षकों के अज्ञान और मूर्खता को रेखांकित किया गया था। चालीस-पचास हजार रुपये वेतन लेने वाले कक्षा में सोते और समय काटते दिखाए गए थे। कुछ गुरुजन मदिरापान के साथ उपस्थित हो जाते हैं। निराशाजनक और आक्रोशित करने वाले इन संदेशों का लोगों ने मजा लिया जबकि ये चिंताजनक है। नगरों में बेरुखी झेल रही हमारी भाषा कुव्यवस्था के कारण कहीं भी ठौर नहीं पा रही है। ऐसे में हिंदी का भविष्य तलाशना कठिन काम है। सिर्फ हिंदी-सिनेमा का आभारी होने से बात बनने वाली नहीं है, कुछ हमें भी करना होगा। हिंदी अखबार और पत्रिकाएं अभी बाज़ार में हैं और कोशिश होना चाहिए कि ये भाषा और साहित्य बचाने में सहयोग करें। जिन्हें साहित्य की चिंता है उन्हें भाषा की चिंता भी करना पड़ेगी। बड़े पुस्तक मेलों, साहित्यिक उत्सवों, चर्चाओं-गोष्ठियों के साथ रोपणी के स्तर पर भी ध्यान देने की जरुरत है। भले ही अंग्रेजी एक जरुरी भाषा प्रतीत हो लेकिन हिंदी कमतर होने से बचना आवश्यक है।

नदी जोड़ो परियोजना

अनूप पौराणिक
लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

भविष्य के लिए नई उपलब्धि का सिंचन करने वाले कदम

साल 2002 में देश में सूखा और सिंचाई की गंभीर समस्या थी, जिसके समाधान के लिए भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 'नदियों को जोड़ने' का विचार प्रस्तुत कर भारत के भविष्य को नया दृष्टिकोण दिया था, लेकिन इसके बाद केंद्र में कांग्रेस की सरकार आ जाने के बाद योजना में कई अड़चने आईं और यह मामला ठंडे बस्ते में चला गया। कांग्रेस सरकार के दौरान इस योजना पर कोई गंभीर काम नहीं हुआ। राहुल गांधी और उनके तमाम नेता बुंदेलखंड में विकास के ठोस काम करने के बजाय सिर्फ राजनीतिक पर्यटन करते रहे, पानी की समस्या से जूझ रहे किसान और आम जनता की ओर उनका ध्यान नहीं दिया। 2014 में केंद्र में सरकार बनते ही पीएम मोदी ने फिर से इस पर काम शुरू किया और 'केन-बेतवा लिंक परियोजना' को मंजूरी दी। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने भी इस योजना के महत्व को समझा और उनकी तत्परता का ही परिणाम है कि अब उनके कार्यकाल के एक साल के अंदर अटल जी का सपना पूरा हो रहा है।

भारत के जल संसाधनों का कुशल प्रबंधन और सतत विकास, हमारी सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। बुंदेलखंड के लिए, जो वर्षों से पानी की कमी और सूखे की मार झेलता आ रहा है, यह स्वप्न अब साकार होता दिख रहा है। 'केन-बेतवा लिंक परियोजना' और 'पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना' इन क्षेत्रों में जल क्रांति का नया अध्याय लिखने जा रही हैं। इन ऐतिहासिक परियोजनाओं का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री मोहन यादव की दृढ़ इच्छाशक्ति और दूरदर्शिता को जाता है।

साल 2002 में देश में सूखा और सिंचाई की गंभीर समस्या थी, जिसके समाधान के लिए भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 'नदियों को जोड़ने' का विचार प्रस्तुत कर भारत के भविष्य को नया दृष्टिकोण दिया था, लेकिन इसके बाद केंद्र में कांग्रेस की सरकार आ जाने के बाद योजना में कई अड़चने आईं और यह मामला ठंडे बस्ते में चला गया। कांग्रेस सरकार के दौरान इस योजना पर कोई गंभीर काम नहीं हुआ। राहुल गांधी और उनके तमाम नेता बुंदेलखंड में विकास के ठोस काम करने के बजाय सिर्फ राजनीतिक पर्यटन करते रहे, पानी की समस्या से जूझ रहे किसान और आम जनता की ओर उनका ध्यान नहीं दिया। 2014 में केंद्र में सरकार बनते ही पीएम मोदी ने फिर से इस पर काम शुरू किया और 'केन-बेतवा लिंक परियोजना' को मंजूरी दी। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने भी इस योजना के महत्व को समझा और उनकी तत्परता का ही परिणाम है कि अब उनके कार्यकाल के एक साल के अंदर अटल जी का सपना पूरा हो रहा है।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के देखे इस सपने के साकार होने का वक्त आ गया है। यह उनकी प्रेरणा और दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि 'केन-बेतवा' और 'पार्वती-कालीसिंध-चंबल' जैसी परियोजनाएं साकार रूप ले रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 25 दिसंबर को अटल

बिहारी वाजपेयी की जयंती पर केन बेतवा लिंक परियोजना के प्रथम चरण का शिलान्यास कर इस दिशा में कदम बढ़ाया है। परियोजना के लिए 44,608 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत हुई है। इसमें केंद्र सरकार 90 प्रतिशत खर्च उठाएगी। बाकी 10 प्रतिशत राशि राज्य सरकार वहन करेगी। यह पीएम मोदी का वाजपेयी जी के अधूरे सपनों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

केन और बेतवा नदियों को जोड़ने वाली यह परियोजना न केवल बुंदेलखंड के लिए पानी की समस्या का समाधान करेगी, बल्कि इससे क्षेत्र की कृषि, उद्योग और रोजगार में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। यह परियोजना लगभग 13.62 लाख हेक्टेयर भूमि को सिंचाई के दायरे में लाएगी और 62 लाख लोगों को पीने का साफ पानी उपलब्ध कराएगी। वहीं 10 जिलों और 1900 गांवों की तस्वीर बदल जाएगी। पिछड़े बुंदेलखंड क्षेत्र में कृषि से जुडी गतिविधियों का बढावा मिलेगा। स्थानीय स्तर पर रोजगार बढेगा और बुंदेलखंड से होने वाला पलायन रुकेगा। इसके अलावा, यह परियोजना बुंदेलखंड के वन्यजीवों के संरक्षण के लिए भी मददगार साबित होगी। पन्ना टाइगर रिजर्व को जल आपूर्ति सुनिश्चित कर, यह क्षेत्र पर्यावरणीय संतुलन में भी योगदान देगा।

पार्वती, कालीसिंध, और चंबल नदियों को जोड़ने की यह परियोजना न केवल मध्यप्रदेश बल्कि राजस्थान के लिए भी वरदान साबित होगी। यह योजना हजारों गांवों में सिंचाई के साधन विकसित करेगी और जल संकट से जूझ रहे क्षेत्रों में राहत प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री मोहन यादव की सरकार ने इस परियोजना को प्राथमिकता देकर यह सुनिश्चित किया है कि इसके माध्यम से क्षेत्र का समग्र विकास हो सके। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और किसानों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य से यह परियोजना मील का पत्थर साबित होगी।

ये परियोजनाएं बुंदेलखंड और आसपास के क्षेत्रों के लिए उम्मीद की नई किरण हैं। पानी की कमी से जूझते किसानों, पलायन करते युवाओं, और पीने के पानी के लिए संघर्ष कर रही महिलाओं के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं हैं। 'केन-बेतवा' और 'पार्वती-कालीसिंध-चंबल' परियोजनाएं न केवल नदियों को जोड़ने का कार्य करेंगी, बल्कि दिलों और सपनों को भी जोड़ेंगी। यह भारत के ग्रामीण इलाकों में समृद्धि और खुशहाली का नया अध्याय लिखेंगी।

आज जब हम इन ऐतिहासिक परियोजनाओं की ओर देखते हैं, तो यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री मोहन यादव का यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों के जीवन में नई उपलब्धि का सिंचन करेगा।

उपलब्धि

भूपेन्द्र गुप्ता
स्वतंत्र लेखक

एक सदी का सपना है नदी जोड़ो अभियान

आजादी के लगभग 23 साल बाद जब इंदिरा जी की सरकार में बांध बनाने वाले इंजीनियर डॉ. केएल राव सिंचाई मंत्री बने तब उन्होंने आर्थर काटन के इस सपने से धूल झाड़ी और इंदिरा जी के सामने रखा। कांग्रेस ने 1970 में इस योजना को नये दृष्टिकोण से जीवित किया। डॉ. केएल राव की सोच थी कि जो हिमालयीन नदियां हैं उनमें ग्लेशियरों के पिघलने के कारण गर्मियों में अतिरिक्त जल होता है और बाढ़ आती है जबकि प्रायद्वीपीय नदियां गर्मियों में सूख जाती हैं और उनमें बरसाती मौसम में बाढ़ आती है अतः हिमालयीन नदियों और प्रायद्वीपीय नदियों को आपस में जोड़ दिया जाता है तो सूखे के मौसम में जल की उपलब्धता बनी रह सकती है इसे इंटर-वेसिन रिवर लिंकिंग कहा गया। इंदिरा गांधी ने 1980 में इस योजना को आगे बढ़ाने के लिए एनडीआरडी की रिपोर्ट तैयार करवाई इसकी वित्तीय व्यवस्था बनाने के लिए शुरुआत की गई और उन्होंने 1982 में 'नेशनल वाटर डेवलपमेंट अथॉरिटी' का निर्माण किया यह नदी जोड़ो अभियान का पहला कदम था इसके अंतर्गत इंटर-वेसिन नदियों को जोड़ने की योजनाओं पर कार्य शुरू हुआ। कई अध्ययन हुए, रिपोर्टें तैयार हुईं।

नदी जोड़ो अभियान आज चर्चा का विषय है। इसका श्रेय सभी पार्टियों लेने की कोशिश भी करती हैं लेकिन इन परियोजनाओं का इतिहास 100 साल से भी अधिक पुराना है। इस इतिहास को जानकर यह समझा जा सकता है कि सपनों के फलीभूत होने में सैकड़ों साल की तपस्या शामिल होती है। इसमें कोई एक व्यक्ति अकेला नहीं है,बल्कि सरकारों के निरंतर और सकारात्मक प्रयास हैं। हालांकि गुलाम भारत में 1900 के दशक में एक अंग्रेज इंजीनियर आर्थर कॉटन ने भारत की नदियों को जोड़ने की कल्पना की थी। उसका उद्देश्य था कि नदियों के अतिरिक्त जल से बड़ी-बड़ी नहरें बनाकर जल मार्गो की वृद्धि की जा सकती है जिससे ब्रिटिश सरकार को व्यापारिक सुविधा मिलेगी तथा दक्षिण भारत के तथा उड़ीसा के सूखे से निपटा जा सकेगा और वहां पर अतिरिक्त जल भेज कर उत्पादन में वृद्धि भी की जा सकेगी। किंतु इसमें आने वाले खर्च को देखकर ब्रिटिश हुकूमत भी आगे नहीं बढ़ी और यह ठंडे बस्ते में चली गई। देश आजाद हुआ और राष्ट्र निर्माण की योजनायें बननी शुरू हुईं। गरीबी संसाधनों के अभाव और तकनीशियनों की कमी से प्रथमिकतायें आगे बढ़ती गई।

आजादी के लगभग 23 साल बाद जब इंदिरा जी की सरकार में बांध बनाने वाले इंजीनियर डॉ. केएल राव सिंचाई मंत्री बने तब उन्होंने आर्थर काटन के इस सपने से धूल झाड़ी और इंदिरा जी के सामने रखा। कांग्रेस ने 1970 में इस योजना को नये दृष्टिकोण से जीवित किया। डॉ. केएल राव की सोच थी कि जो हिमालयीन नदियां हैं उनमें

ग्लेशियरों के पिघलने के कारण गर्मियों में अतिरिक्त जल होता है और बाढ़ आती है जबकि प्रायद्वीपीय नदियां गर्मियों में सूख जाती हैं और उनमें बरसाती मौसम में बाढ़ आती है अतः हिमालयीन नदियों और प्रायद्वीपीय नदियों की आपस में जोड़ दिया जाता है तो सूखे के मौसम में जल की उपलब्धता बनी रह सकती है इसे इंटर-वेसिन रिवर लिंकिंग कहा गया। इंदिरा गांधी ने 1980 में इस योजना को आगे बढ़ाने के लिए एनडीआरडी की रिपोर्ट तैयार करवाई। इसकी वित्तीय व्यवस्था बनाने के लिए शुरुआत की गई और उन्होंने 1982 में 'नेशनल वाटर डेवलपमेंट अथॉरिटी' का निर्माण किया यह नदी जोड़ो अभियान का पहला कदम था। इसके अंतर्गत इंटर-वेसिन नदियों को जोड़ने की योजनाओं पर कार्य शुरू हुआ। कई अध्ययन हुए, रिपोर्टें तैयार हुईं।

जब 1999 में एनडीए की सरकार आई और अटल बिहारी बाजपेयी प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने इसे उलटकर योजना के पूरे स्वरूप को ही बदल दिया और इंटर-बेसिन परियोजनाओं को इंट्रा-वेसिन परियोजनाओं में बदल दिया किंतु 2003 तक यह विचार स्वरूप लेता इसके पहले ही 2002 में सुप्रीम कोर्ट में इसके विरोध में पीआईएल लग गई।आगामी चुनाव में बाजपेयी सरकार उलट गई और 2004 में मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यूपीए सरकार का गठन हुआ। तब इस परियोजना को फिर वास्तविक स्वरूप यानि इंटर- बेसिन योजना के रूप में जीवित किया गया तथा सरकार ने इस पर व्यापक अध्ययन करवाया।

साल 2012 में जब सुप्रीम कोर्ट में यह फैसला दिया कि नदियों के इंटरलिंकिंग का फैसला नीतिगत है और इसे सरकारें ही करें। तब इस योजना के लिए 2012 से गति प्रदान की गई विभिन्न राज्यों के जल बंटवारे के आपसी समझौते और विवादों के निपटारे, पर्यावरणीय जोखिम एवं इकोसिस्टम को पहुंचने वाले नुकसानों के अध्ययन करते-करते और सुलझाते-सुलझाते 2021 में केन बेतवा योजना को कैबिनेट की स्वीकृति मिली जिसका भूमि पूजन वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया है। इंटर बेसिन नदी जोड़ो परियोजना मूलत आर्थर कॉटन का सपना था जिसे डॉ. केएल राव ने आगे बढ़ाया और इंदिरा गांधी की सरकार ने इसे संस्थागत स्वरूप प्रदान कर 'राष्ट्रीय जल विकास अथॉरिटी' का निर्माण किया और इस अथॉरिटी ने ही इस कल्पना को जमीन पर उतारने की शुरुआत की। संसाधन जुटाये, अध्ययन करवाया और यह योजना लगभग 54 साल बाद अब आकार ले रही है।

आज देश में विकास को एक निरंतर अवधारणा के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता है। इसका श्रेय अकेली एनडीए सरकार को देना आर्थर कॉटन के सपने के साथ भी धोखा होगा और डॉ. केएल राव तथा इंदिरा गांधी की संकल्पना के साथ भी बेईमानी होगी। विकास की योजनाओं की निरंतरता के लिए जिन-जिन लोगों ने काम किया है सभी सरकारों को श्रेय दें इसमें इंदिरा गांधी, अटल बिहारी वाजपेई, मनमोहन सिंह एवं नरेंद्र मोदी सभी शामिल हैं। सपनों के जमीन पर उतरने की यही सच्चाई है।

जुआ-सट्टा सहित अवैध गतिविधियों की रोकथाम के लिए पुलिस का अभियान निरंतर जारी

जुए के फड़ पर पुलिस ने दी दबिश, 7 आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। जिले में अवैध गतिविधियों के खिलाफ पुलिस का अभियान निरंतर जारी है। पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया के निर्देशन में खुले में शराब पीने वाले, फरार वांरटियों, जुआ-सट्टा और यातायात नियमों को तोडने वालों पर लगातार कार्रवाही की जा रही है। खासकर जुआ-सट्टे के संचालन को लेकर पुलिस अधीक्षक का रवैया सख्त है।

एसपी निश्चत एन. झारिया ने जिले के सभी थाना प्रभारियों को जुए-सट्टे और अवैध गतिविधियों की रोकथाम के लिए निर्देशित किया है। इसी तारतम्य में मुलताई पुलिस ने जुआ खेलने वालों के खिलाफ कार्रवाही करते हुए आरोपियों को पकड़ा है। पुलिस विभाग के पीआरओ से मिली जानकारी के अनुसार मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम गोनापुर में बैरियर के पास नाले के समीप कुछ लोग टॉर्च की रोशनी में ताश के पत्तों पर पैसों का दांव लगाकर जुआ खेल रहे हैं। थाना प्रभारी मुलताई राजेश सातनकर ने योजना बनाकर टीम के साथ दबिश देकर मौके से राणा सिंह पिता प्रीतम सिंह बागरी (24) निवासी वरूड, रोशन पिता मधुकर गाडगे (21) निवासी वरूड, प्रणय पिता बामण सातपुते (25) निवासी शेघाट, प्रीतेश पिता सुनील मालवे (23) निवासी शेघाट, मोहित पिता बाबाराव ब्राहमणे (24) निवासी जरूड, योगेश पिता किशन आठनेरे (35) निवासी पाण्डा, थाना मोर्शी और संतोष पिता राजु उईके (30) निवासी वरूड को पकड़ा है। जिनसे 20,700 रूपये नगद और ताश के पत्ते, एक नग टॉर्च जब्त किये है। आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर गिरफ्तार किया एवं जमानत मुचलके पर रिहा किया गया। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी मुलताई राजेश सातनकर, चौकी प्रभारी प्रभात पट्टन नेपाल सिंह ठाकुर, आरक्षक लक्ष्मीचंद, डुमनेश्वर कुमरे, विशाल चौरसिया, एवं सैनिक दिनेश रघुवंशी का विशेष योगदान रहा।

पुलिस ने किया स्थाई वारंटी को गिरफ्तार- रानीपुर पुलिस में जुवाड़ी निवासी हिमांशु अहाके को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। थाना प्रभारी अवधेश तिवारी ने बताया कि आबकारी एक्ट में पिछले 3 सालों से फरार चल रहे जुवाड़ी निवासी हिमांशु पिता रामेश्वर अहाके को थाना प्रभारी अवधेश तिवारी के मार्गदर्शन में एसआई भारत बौरासी, प्रेमलाल परते, आरक्षक सतीश वाडिवा ने जुवाड़ी से गिरफ्तार जेल भेज दिया है।

अज्ञात कारणों से महिला ने खाया जहर, मौत

बैतूल। एक महिला ने अज्ञात कारणों से जहरीला पदार्थ खा लिया। जिसे उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती किया गया था, जहां महिला ने दम तोड़ दिया। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। अस्पताल चौकी प्रभारी सुरेन्द्र वर्मा के मुताबिक महिला दीना उईके पति राजेश (30) आमला थाना इलाके के हसलपुर की रहने वाली है। महिला का मायका बैतूल गंज थाना इलाके के बोड़ी बगवाड़ का है। महिला रविवार को ससुराल से अपने मायके आई हुई थी। यहां उसने खेत जुताई पर लिया हुआ है, जिस पर काम करने आई थी। मंगलवार रात उसने जहर खा लिया, जिसके बाद परिवार वाले उसे जिला अस्पताल लेकर पहुंचे थे, जहां उसने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। महिला ने जहर क्यों खाया, इसका कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। अस्पताल पुलिस चौकी ने मर्ग डायरी गंज पुलिस को भेजी है। जिसकी जांच की जा रही है।

18 किलोमीटर पीछा कर पकड़ा गोवंश से भरा वाहन

पुलिस और राष्ट्रीय हिंदू सेना की बड़ी कार्रवाई

बैतूल। राष्ट्रीय हिंदू सेना और सोनाघाटी पुलिस ने मिलकर गोवंश तस्करों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए गोवंश से भरा पिकअप वाहन पकड़ा। वाहन को उपर से खाली कैरेट और पटिया के पार्टीशन से ढका गया था, जबकि नीचे 11 नग गोवंश को रस्सियों से बांधकर एक के ऊपर एक लादा गया था। यह कार्रवाई सोमवार रात 3 बजे हुई, जिसमें 18 किलोमीटर तक पीछा करने के बाद वाहन को रोका गया। राष्ट्रीय हिंदू सेना के विभाग अध्यक्ष दीपक कोसे ने

बताया कि संगठन को सूचना मिली थी कि शाहपुर क्षेत्र के देशावाड़ी गांव के नज़दीकी जंगल से सफेद रंग की टाटा अल्ट्रा पिकअप वाहन (एमएच.30.बीडी.6095) में गोवंश भरकर महाराष्ट्र के कत्लखाने ले जाया जा रहा है। सूचना को गंभीरता से लेते हुए प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय को जानकारी दी गई और योजनाबद्ध तरीके से सोनाघाटी पुलिस के साथ मिलकर कार्रवाई की गई। आठवां मिल के पास दो टीमें सक्रिय हुईं और पाढर क्षेत्र में वाहन को रोकने का प्रयास किया गया, लेकिन तस्करों ने गाड़ी तेज़ रफ्तार से भगानी शुरू कर दी। पुलिस और संगठन के सदस्यों ने तस्करों का पीछा किया और धर्म कांटा के पास गाड़ी को रोकने में सफलता पाई। तस्करों ने पुलिस और संगठन के सदस्यों को देख वाहन छोड़ दिया और मौके से फरार हो गए। वाहन की जांच करने पर पाया गया कि उसमें 11 नग गोवंश को रस्सियों से बांधकर रखा गया था। सोनाघाटी पुलिस चौकी के एएसआई जगदीश नरवरे, आरक्षक महेश नगदे और आरक्षक कमलेश पाल ने कार्रवाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गोंडी लोकनृत्य में बिखरे परंपरा के रंग

माथनी में गोंडी लोकनृत्य और फिल्मी डांस प्रतियोगिता का सफल आयोजन

बैतूल। ग्राम माथनी में नव युवा समिति के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय गोंडी लोकनृत्य और फिल्मी डांस प्रतियोगिता का समापन हुआ। यह दो दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 23 दिसंबर की शाम शुरू हुआ था, जिसमें गोंडी परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत मेल देखने को मिला। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य गोंडी संस्कृति का संरक्षण और ग्रामीण प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम में 17 गोंडी लोकनृत्य दल और 25 एकल कलाकारों ने भाग लिया। होशंगाबाद, छिंदवाड़ा और बैतूल सहित अन्य क्षेत्रों के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों का दिल जीता। इस आयोजन में 1000 से अधिक दर्शक उपस्थित थे, जो इसकी सफलता और भव्यता को दर्शाता है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. योगेश पंडाग्रे (विधायक) ने नव युवा समिति के प्रयासों की सराहना करते हुए गोंडी संस्कृति के संरक्षण का महत्व

बताया। मुख्य वक्ता डॉ. राजा धुर्वे (संचालक, एमसीआई बैतूल) ने शिक्षा और जागरूकता पर जोर दिया। अन्य विशिष्ट अतिथियों में जामवंत सिंह कुमरे (जयस प्रदेश संयोजक), जिला पंचायत सदस्य संगीता श्याम परते, जनपद सदस्य प्रमिला मूलचंद वर्मा, सरपंच सम्मी मंतू सलाम, उपसरपंच सुमंत्रा सरकार इवने और जनपद सदस्य अरविंद वरकड़े उपस्थित रहे। ग्राम के वरिष्ठ मार्गदर्शकों, प्रेम मर्सकोले, गंगाराम मर्सकोले, मनोहर तुमड़ाम, सुमरत उईके और धम्मु उईके ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में ओम म्यूजिक जोन के निर्देशक ओम प्रधान, राजेंद्र इरपाचे और बादल इरपाचे शामिल थे। प्रथम स्थान झुलदाई डांस ग्रुप महतपुर दामजीपुरा, द्वितीय स्थान- बीपी डांस ग्रुप छतरपुर, तृतीय स्थान, डीपी ट्राइबल डांस ग्रुप माथनी। फिल्मी डांस मे प्रथम स्थान राजकुमारी उइके कोल्हिया चोपना, द्वितीय स्थान सत्यम वट्टी छिंदवाड़ा, तृतीय स्थान रूही सलाम बैतूल सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार प्रदान किए गए।

कार्यक्रम के अध्यक्ष दिलप्रकाश तुमड़ाम ने बताया कि यह आयोजन लगातार 5 वर्षों से किया जा रहा है। उपाध्यक्ष करन उइके और सदस्य राजू उईके, संजू उईके, राहुल मर्सकोले, अजय मर्सकोले, मधुकर धुर्वे, मुकेश धुर्वे, सतीश परते, शिवशंकर उइके, राकेश उइके, परेश धुर्वे, अमित इवने, बब्बू धुर्वे, राजकुमार इवने और शिवा इरपाचे सहित अन्य सदस्यों ने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह कार्यक्रम गोंडी संस्कृति को संरक्षित करने और ग्रामीण युवाओं को प्रेरित करने का माध्यम बना। समिति ने भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजनों की प्रतिबद्धता जताई है, ताकि ग्रामीण समाज अपनी परंपराओं से जुड़ा रह सके और नई प्रतिभाओं को मंच मिलता रहे।

प्रवीण गुगनानी का किसान संघ ने किया अभिनंदन

शाल श्रीफल से किया सम्मानित

बैतूल। भारतीय किसान संघ, बैतूल जिला इकाई के सभी प्रमुख पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने प्रवीण गुगनानी को अटल बिहारी स्मृति सम्मान एवं एक लाख रुपये की सम्मान राशि प्राप्त होने पर बधाई दी है। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी द्वारा यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रवीण गुगनानी की पुस्तक स्वप्न ही तो है कविता के लिए प्रदान किया गया। इस अवसर पर किसान संघ के संभाग संगठन मंत्री दिनेश शर्मा, प्रांत पदाधिकारी पुरुषोत्तम

सरले, और अमर दास चौधरी ने प्रवीण गुगनानी के कार्यालय पहुंचकर उन्हें शाल और श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं किसान संघ के विभाग संगठन मंत्री दिनेश शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अखिल भारतीय स्तर का यह अटल बिहारी वाजपेयी सम्मान किसान संघ के एक कार्यकर्ता को मिलना संगठन के लिए गर्व की बात है। उन्होंने यह भी कहा कि सम्मान की राशि साहित्य परिषद को समर्पित कर प्रवीण गुगनानी ने समर्पण का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। दिनेश शर्मा ने किसान संघ की ओर से प्रवीण गुगनानी को शुभकामनाएं दीं और विश्वास जताया कि भविष्य में भी वह अपनी लेखनी के माध्यम से संगठन के विचारों को आगे बढ़ाते रहेंगे। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने प्रवीण गुगनानी की उपलब्धि की सराहना की और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। किसान संघ की इस सहभागिता से कार्यक्रम ने एक यादगार रूप ले लिया।

धड़कन शाह ने कॉमनवेल्थ कराटे चैम्पियनशिप में जीता गोल्ड मेडल

बैतूल। बैतूल की धडक़न शाह ने साउथ अफ्रीका के डरबन में आयोजित कॉमनवेल्थ कराटे चैम्पियनशिप में गोल्ड मेडल जीता। धड़क़न के बैतूल पहुंचने पर जोऱदार स्वागत किया गया। रेलवे स्टेशन से घर तक जुलूस निकाला गया। साउथ अफ्रीका के डरबन में आयोजित कॉमनवेल्थ चैंपियनशिप में कराटे की प्रतियोगिता में उनका पहला मुकाबला साउथ अफ्रीका से हुआ था। जिसे उन्होंने 5-0 से अपने नाम कर लिया था। इसके

बाद दूसरा मुकाबला बोत्सवाना, तीसरा केन्या और चौथा ऑस्ट्रेलिया से हुआ। उन्होंने फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ी को हराकर गोल्ड हासिल किया। सभी मैच 53 किलोग्राम वर्ग में हुए थे। इस मौके पर धड़क़न ने अपनी खेल उपलब्धियों के लिए परिवार वालों और कोच की विशेष भूमिका बताई है। इसके पहले धडक़न ने भूटान में आयोजित साउथ चैम्पियनशिप में भी गोल्ड जीता था। हाल ही में उसने इंदौर में आयोजित नेशनल चैंपियनशिप में भी गोल्ड जीता है। धडक़न 2016 से कराटे की प्रैक्टिस कर रही है। 2023 में राज्य खेल एकेडमी में कराटे ट्रेनिंग के लिए उनका चयन हुआ था। तब से वह भोपाल में ही प्रैक्टिस कर रही है।

सुशासन दिवस पर जिला कार्यालय में लगी प्रदर्शनी

जिले के 30 संगठनात्मक मंडलों में बूथ स्तर पर मनाई गई अटलजी की जन्म जयंती

बैतूल। भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100 वीं जयंती के शताब्दी समारोह को जिला भाजपा द्वारा सुशासन दिवस के रूप में जिले में बूथ स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। वहीं जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में अटलजी के जीवनवृत पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में अटल जी के राजनैतिक जीवन और निर्णयों को दिखाया गया। प्रदर्शनी का उदघाटन पूर्व सांसद सुभाष आहूजा, ज्योति धुर्वे, पूर्व जिलाध्यक्ष शिवप्रसाद राठौर, विधायक हेमंत खंडेलवाल ने फिता काटकर किया। तत्तपश्चात अटल जी को श्रृद्धासुमन अर्पित किए गए। प्रदर्शनी के संयोजक जिला मंत्री अतीत पंवार ने बताया कि अटल जी की 100 वीं जन्म जयंती पर संगठन जन्मशताब्दी वर्ष मना रहा है। इसी क्रम में अटल जी के संगठन और सरकार के कार्यो का वर्णन प्रदर्शनी में शामिल किया गया है। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, वरिष्ठ नेता रमेश मिश्रा, नपाध्यक्ष पार्वती बारस्कर,अंशुमन बचले, सौरभ राघव सहित बडी संख्या में पार्टी पदाधिकारी, नगर मंडल के कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

अटल जी के विचारों को आत्मसात करें कार्यकर्ता : बबला शुक्ला- आज हम भाजपा के पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100 वीं जयंती मना रहे है। भाजपा कार्यकर्ता अटल जी के जीवन पर आधारित विचारों को आज आत्मसात करते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने की जरूरत है। उक्त उदगार भारतीय जनता पार्टी के बडोरा मंडल के दनोरा बूथ क्रमांक 46 पर आयोजित सुशासन दिवस कार्यक्रम पर भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला ने व्यक्त करते हुए कहा कि अटल जी ने अपना संपूर्ण जीवन सत्ता और संगठन एवं भारत के विकास के लिए व्यतीत किया। आज उनका सपना श्री प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में साकार हो रहा है। श्रृद्देय अटल जी ने आपातकाल में भी डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे संगठन के वटवृक्ष लोगों के साथ कार्य किया और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में उन्होंने संगठन को मजबूत बनाकर एक नई श्रृंखला कार्यकर्ताओं की तैयार की। प्रधानमंत्री के रूप में पोखरन में परमाणु परिक्षण , कारगिल विजय ,प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और नदियों को जोडने के लिए वे सदैव अविस्मरणीय रहेगें। कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी कार्यकर्ताओं ने भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी को अपने-अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर अटल जी के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हुए राष्ट्र प्रथम की प्रेरणा लेकर संगठन के कार्य में निरंतर जुडे रहने की बात दोहराई। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता मधु पाटनकर, मंडल अध्यक्ष नीतू पटेल, विवेक जावलकर, नंदकिशोर रावत और रामपाल सरले सहित बडी संख्या में ग्रामीणजन मौजूद रहे।

बैतूल में 27 को होने वाला सीएम का कार्यक्रम फिर निरस्त

बैतूल। 27 दिसंबर को बैतूल में स्वामित्व योजना के तहत आवासीय पट्टे के वितरण का वृहद कार्यक्रम होना था। जिसमें प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भाग लेने वाले थे, लेकिन यह कार्यक्रम निरस्त हो गया है। बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने भी इसकी पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम अब 27 को बैतूल में नहीं होगा। एक प्रशासनिक अधिकारी ने भी बताया कि कार्यक्रम निरस्त हो गया है। बता दे कि इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी वर्चुअली जुडक़र हितग्राहियों से संवाद करना था। संभावना है कि अब यह कार्यक्रम अन्य किसी जिले में आयोजित होगा। गौरतलब रहे कि मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में शिरकत करने की तैयारियों को लेकर मंगलवार को जिला कलेक्टर नरेन्द्र सूर्यवंशी ने अधिकारियों की बैठक ली थी, जिसमें 27 दिसंबर के कार्यक्रम को लेकर अधिकारियों को तैयारी में जुटने के निर्देश दिए गए थे, लेकिन शाम होते-होते खबर आई कि यह कार्यक्रम बैतूल में निरस्त हो गया है। इसके पहले बैतूल में 19 दिसंबर को सीएम का कार्यक्रम होना था, लेकिन वह भी निरस्त हो गया था। 27 दिसंबर के कार्यक्रम की सूचना खुद प्रशासन ने दी थी, लेकिन अब यह भी कैंसिल हो गया है।

बच्चों को जिताने शिक्षक ने बहाया पसीना

बैतूल। विगत दिनों एमएलबी स्कूल में आयोजित विज्ञान गणित व पर्यावरणीय जिला स्तरीय मॉडल प्रतियोगिता संपन्न हुई, जिसमें स्कूल, संकुल व ब्लॉक स्तर से विजेता छात्राओं व मार्गदर्शक शिक्षक ने शामिल होकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया। ढोडवाडा स्कूल के छात्र सत्यम कुंभारे, दिव्यांशी परिहार ,रूपाली पाटणकर व शिक्षक मदनलाल डढोरे, शारदा माथनकर ने लगातार मेहनत कर त्रिकोणमिति उद्यान पर गणितीय मॉडल बनाकर जिला स्तरीय प्रदर्शनी में अच्छा प्रदर्शन किया गया । जिसके तहत मॉडल का संभाग के लिए चयन हुआ ।

अब बच्चे संभाग स्तर पर प्रदर्शन करेंगे, ज्ञातृत्व हो की रविवार को छात्र व शिक्षकों को समय पर प्रदर्शनी में पहुंचना था। परंतु गाड़ी खराब होने के कारण समय पर प्रदर्शनी में पहुंचने के लिए भृत्यो की व्यवस्था नहीं होने के चलते शिक्षक मदनलाल डढोरे ने बड़ा मॉडल होने के चलते रास्ते में कार खराब होने के कारण अपना मॉडल सिर पर उठाकर लगभग 1 किमी पैदल लेकर पहुंचे। उपस्थित शिक्षकों व अधिकारियों ने यह नजारा देखा तो सभी ने शिक्षक के इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि हर शिक्षक ईमानदारी, कर्मठता और मेहनत के साथ काम करें तो निश्चित ही शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है। इस अवसर पर अनेक शिक्षक साथी अधिकारी कर्मचारी छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

अब बैतूल में भी थ्रीडी पर फिर धूम मचाएगी पुष्पा-2

25 दिसम्बर से कांतिशिवा मल्टीप्लेक्स में होगा प्रदर्शन

बैतूल। अभी तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म का खिताब हासिल कर पुष्पा 2 मील का पत्थर बन गई है। बीते रविवार को पुष्पा 2 ने दमदार कमाई कर बाहुबली 2 का सबसे बड़ा रिकॉर्ड तोड़ दिया। यह फिल्म बैतूल की कांतिशिवा टॉकीज सहित देश और प्रदेश के

चुनिंदा सिनेमाघरों में ही थ्रीडी में दिखाई जाएगी। बैतूल जिले में भी पुष्पा-2 फिल्म का व्यापार जमकर है। लोग पुष्पा-2 फिल्म देखने के लिए लगातार सिनेमाघर पहुंच रहे है। उम्मीद की जा रही है कि पुष्पा-2 पसंद करने वाले थ्रीडी इफेक्ट में भी फिल्म का मजा जरूर लेंगे। कांतिशिवा मल्टीप्लेक्स के प्रबंधक ने बताया कि थ्री डी इफेक्ट के साथ फिल्म के शौकीनों को पुष्पा-2 देखने के लिए सिर्फ कांतिशिवा मल्टीप्लेक्स में ही सुविधा मिलेगी। यह फिल्म देश और प्रदेश के चुनिंदा सिनेमाघरों में ही थ्रीडी इफेक्ट के साथ दिखाई जाएगी। बता दे कि पुष्पा-2 अभी तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म का खिताब हासिल कर चुकी है। बीते रविवार को पुष्पा 2 ने दमदार कमाई कर बाहुबली 2 का सबसे बड़ा रिकॉर्ड तोड़ दिया। यह फिल्म बैतूल की कांतिशिवा टॉकीज सहित देश और प्रदेश के चुनिंदा सिनेमाघरों में ही थ्री डी में दिखाई जाएगी।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों से बौद्धिक विकास में वृद्धि होती है : राजीव खंडेलवाल

बैतूल। यूरो प्राइड स्कूल और ई किड्स के साथ 14वीं वार्षिक उत्सव का भव्य तरीके से आयोजन किया गया। जिसमें ब'चों ने बहुत ही उत्साह के साथ हिस्सा लिया। कार्यक्रम में दर्शकों को कुछ नया देखने को मिला। कार्यक्रम के अतिथि समाजसेवी राजीव खंडेलवाल ने परंपरागत तरीके से दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस मौके राजीव खंडेलवाल ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने से बच्चों का बौद्धिक विकास और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। उन्होने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से बच्चों का मनोरंजन होता है और आराम दायक अनुभव करते है फिर वह मानसिक दृढता व तरोताजा होकर वे शिक्षा में रुचि लेते हैं। स्कूल की डायरेक्टर डॉ.प्राची भार्गव ने बताया कि हमारी कोशिश रहती है बच्चो शिक्षा के साथ रचनात्मक गतिविधियों में भी सम्मिलित हों। इस अवसर पर बड़ी संख्या में बच्चो और पालकगण मौजूद थे।

पारसनाथ भगवान का जन्मोत्सव मनाया जाएगा

धार। दिगम्बर जैन पारसनाथ अतिक्षय तीर्थ क्षेत्र आहूजी में 26 दिसंबर को भगवान पारसनाथ का जन्मोत्सव मनाया जाएगा। प्रबंध समिति के अध्यक्ष वीरेन्द्र जैन एवं सचिव राकेश गंगवाल के अनुसार होने वाले कार्यक्रमों में प्रातः 7 बजे भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा, प्रातः 8 बजे नित्य पूजन एवं पारसनाथ मंडल विधान पूजन, प्रातः 10 बजे भव्य शोभायात्रा, 11 बजे अतिथि उद्बोधन, सम्मान एवं संत प्रवचन होंगे। अंत में श्रीजी के जन्माभिषेक एवं महाआरती होगी। मीडिया प्रभारी सुभाष जैन ने बताय कि जन्मोत्सव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर, पूर्व केन्द्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, विहिप के अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुकुमचंद सांवला, भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज सोमानी, दानवीर भूमि प्रदाता गजेन्द्र जैन गिन्नी ग्रुप शामिल होंगे। संपूर्ण कार्यक्रम को आचार्य विप्रणतसागरजी मसा एवं मानतुंगगिरी तीर्थ क्षेत्र की संचालिका श्रीमती चंद्रमति माताजी का सान्निध्य मिलेगा। दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल एवं आहू प्रबंध समिति अध्यक्ष वीरेन्द्र जैन ने बताया कि कार्यक्रम में समाजजनों के अतिरिक्त मप्र, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों से भक्त शामिल होंगे।

सीएम राइज आमला के विद्यार्थियों ने किया औद्योगिक भ्रमण

आमला। नगर के सीएम राइज शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आमला के व्यावसायिक शिक्षा अंतर्गत संचालित इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी [आईटी] के 52 विद्यार्थियों ने शिक्षको के मार्गदर्शन में मंगलवार दिनांक 24 दिसंबर 2024 को प्राचार्य डॉ राजेश कुमार खैरवाल के निर्देशन में औद्योगिक भ्रमण अंतर्गत शासकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज सोनाघाटी बैतूल का भ्रमण किया। पालीटेक्निक कॉलेज के प्राचार्य श्री अरुण भदौरिया एवं शिक्षक साथियो श्री गोरखेडे, एवं श्री किशोर झरबड़े द्वारा विद्यार्थियों को समस्त प्रायोगिक लेबोरेट्री का भ्रमण कराया गया एवं महत्वपूर्ण टिप्स दिए गए। भविष्य में आईटी के क्षेत्र में रोजगार के अवसर पालीटेक्निक कॉलेज में प्रवेश एवं रोजगार के विकल्प इत्यादि की जानकारी प्रदान की गई। छात्रों ने समस्त इकाइयों का भ्रमण किया अपने मन मस्तिष्क में उठने वाले प्रश्नों को पूछा एवम उनका समाधान पा कर प्रफुल्लित हुए। इस अवसर पर व्यावसायिक शिक्षा प्रभारी श्री प्रदीप नागले, प्रशिक्षक श्री कृष्णा सूर्यवंशी [आईटी/आईटीस], श्री परवेज आलम, श्रीमती ज्योति सोनी, श्रीमति जुली उमाटे ने अपनी सहभागिता प्रदान की।

पांच लाख की लागत से होगा सांस्कृतिक चौपाल निर्माण कार्य

बैतूल। आमला विधानसभा के ग्रामों में 5 लाख की प्रशासकीय स्वीकृति से सांस्कृतिक मंच चौपाल निर्माण कार्य किए जाएंगे। जारी आदेश के अनुसार घोड़ाडोंगरी विकासखंड की ग्राम पंचायत कोलगांव के ग्राम जाजलपुर में माता मंदिर के पास सांस्कृतिक मंच चौपाल निर्माण कार्य 2 लाख 50 हजार की लागत से किया जाएगा। इसी प्रकार घोड़ाडोंगरी विकासखंड की ग्राम पंचायत कोलगांव के ग्राम मडकाढाना में हनुमान मंदिर के पास 2 लाख 50 हजार की लागत से सांस्कृतिक मंच चौपाल निर्माण कार्य किया जाएगा। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने निर्माण एजेंसी ग्राम पंचायत कोलगांव को योजना के तहत निर्धारित समय सीमा में गुणवत्तापूर्ण कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए है।

गांधी वार्ड में 52 हजार 762 रुपए की लागत से होगा टीन शेड निर्माण कार्य

बैतूल। बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल की स्वेच्छानुदान निधि से बैतूल बाजार के गांधी वार्ड में टीन शेड निर्माण कार्य किया जाएगा। जारी आदेश के अनुसार बैतूल बाजार के गांधी वार्ड में 52 हजार 762 रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति से टीन शेड निर्माण कार्य किया जाएगा। इस निर्माण कार्य में विधायक निधि से 50 हजार की राशि एवं 2 हजार 762 की राशि नगर पालिका द्वारा वहन की जाएगी।

अटल जी दूरदृष्टि के नायक थे, संगोष्ठी संपन्न

बैतूल। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार नेहरू युवा केंद्र माय भारत द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर संगोष्ठी व शपथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम वीवीएम कॉलेज से प्रो.एसआर गायकवाड व छात्रावास अधीक्षक सुरेश कनाठे व राधेलाल बनखेडे के आतिथ्य में और धनंजय सिंह ठाकुर की अध्यक्षता में हुआ। इस मौके पर संगोष्ठी में सुरेश कनाठे ने कहा कि अटल जी के किए हुए कार्यों को आज हम विकास की दृष्टि से धरातल पर देख रहे चाहे वह नदी जोड़ो अभियान हो, चाहे गांव से गांव जोड़ो अभियान हो, जय जवान जय

किसान जय विज्ञान हो। उन्होने कहा कि अटल दूरदृष्टी के नायक थे। श्री गायकवाड जी अटल जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के युवाओं को अटल जी के इन आचार विचार व भाव के साथ पढकर विशेष जीवन में उतारने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। माय भारत पोर्टल की जानकारी से धनंजय सिंह ठाकुर ने अवगत कराया और कहा कि अटल जी हमारे लिए सदैव युगपुरुष प्रेरणा पुरुष के तौर रहेंगे। इस अवसर पर खेल युवा कल्याण विभाग से रामनारायण शुक्ला, जन अभियान परिषद से इंद्रदेव कावडकर, संजय कुमार, सुशील उदयपुरे आदि मौजूद थे।

अटलजी ने सशक्त और समर्थ भारत के निर्माण का स्वप्न देखा था, आज वह मोदी के नेतृत्व में साकार होने की तरफ अग्रसर है : पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा

पूर्व प्रधानमंत्री अटलजी की 100वीं जन्म जयंती पर जिले में प्रत्येक मंडल के बूथों केंद्रों पर सुशासन दिवस के रूप में मनाया

धार। भाजपा जिला संगठन ने 25 दिसम्बर पर पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न, अटलजी की जन्मजयंती पर सुशासन दिवस के रूप में जिले के प्रत्येक मंडल तथा बूथों केंद्रों पर आयोजन हुआ। धार नगर भाजपा मंडल अध्यक्ष विशाल निगम और जयराज देवड़ा एवं भाजपा पदाधिकारियों ने अटलजी की सरकार में कार्य करने वाले पूर्व केंद्रीय खेल मंत्री रहे वरिष्ठ नेता विक्रम वर्मा के निवास पहुंचकर शाल श्रीफल से सम्मानित किया।

भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी ने बदनावर विधानसभा के ग्राम नागदा में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत बनाई गई सड़क पर सुशासन यात्रा निकाल कर पूर्व अटलजी के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा विधायक नीना वर्मा और कालु सिंह ठाकुर, सुशासन दिवस कार्यक्रम जिला संयोजक विश्वास पांडे,भाजपा नेता जिला पदाधिकारी सभी मंडल अध्यक्ष समेत बूथ अध्यक्षों ने अनेक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित कर सुशासन दिवस के रूप में मनाया।

पूर्व केंद्रीय खेल मंत्री विक्रम वर्मा ने कहा कि अटलजी ने जिस सशक्त और समर्थ भारत के निर्माण का स्वप्न देखा था, आज वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में साकार होने की तरफ अग्रसर है।

भाजपा सरकार अनेक जन हितैषी योजनाओं को संचालित कर रही है। अटलजी ने अपना संपूर्ण जीवन सत्ता और संगठन एवं भारत के विकास के लिए व्यतीत किया वे साहित्य के क्षेत्र में भी जिन्होंने अपनी मधुर राष्ट्र भक्ति की कविताओं के माध्यम से हम सबको नई प्रेरणा दी लोकसभा में जब अटलजी का उद्बोधन होता था तो विपक्ष के लोग दंग रह जाते थे। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि पूर्व केंद्रीय खेल मंत्री विक्रम वर्मा को सम्मानित करने के अवसर पर भाजपा नेता प्रभु राठौर ,पूर्व जिला महामंत्री उमेश गुप्ता, जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, नगर भाजपा मंडल अध्यक्ष विशाल निगम और जयराज देवड़ा,मनीष प्रधान, दीपक बिड़कर,विपिन राठौर, नितेश अग्रवाल सहित भाजपा नगर पदाधिकारी बूथ अध्यक्ष एवं भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहें।

किसानों को नई टेक्नोलॉजी से बने नये-नये यंत्रों का उपयोग करना चाहिए : विधायक मलैया

खजुराहो में आयोजित कार्यक्रम का लाइव प्रसारण देखा व सुना

दमोह। पानी बहुत बड़ी चीज है, पहले प्रदेश के अंदर 07 से 7.5 लाख हेक्टेयर सिंचाई होती थी धीरे-धीरे सिंचाई बड़ी और उसके बाद सिंचाई का रकबा बढ़ता गया, अब 45 लाख हेक्टेयर सिंचाई का रकबा हो गया हैं। इस आशय की बात पूर्व मंत्री एवं दमोह विधायक जयंत कुमार मलैया ने आज कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित किसान सम्मेलन एवं कृषि विज्ञान मेले के दौरान कही। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती और भगवान बलराम के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर नितेन्द्र सिंह लोधी, हरिश्चद्र पटेल, नर्मदा सिंह एकता, श्रीराम पटेल, पूरन पटेल, कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर, एसडीएम दमोह आरएल बागरी, उप-संचालक कृषि जितेन्द्र सिंह राजपूत मंचासीन रहे।

पूर्व मंत्री एवं दमोह विधायक श्री मलैया ने कहा किसानों को नई टेक्नोलॉजी से बने नये-नये यंत्रों का उपयोग करना चाहिए, जानकारी इकट्ठी करेंगे और काम करेंगे, उतनी लागत कम एवं उत्पादन और आय बढ़ाएंगे। कार्यक्रम उपरांत अतिथियों ने कलेक्ट्रेट परिसर में लगाई गई प्रदर्शनी और डेमोस्ट्रेशन के लिए आए कृषि यंत्रों का अवलोकन किया। कार्यक्रम के दौरान जनप्रतिनिधियों और अधिकारी-कर्मचारी, किसानों ने खजुराहो में आयोजित केन-बेतवा लिंक परियोजना कार्यक्रम का लाइव प्रसारण देखा व सुना गया।

पूर्व मंत्री एवं दमोह विधायक जयंत कुमार मलैया ने कहा कहा केन बेतवा लिंक परियोजना का आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव जी शुभारंभ कर रहे हैं, इस योजना के अंदर आठ डेम है, इससे लगभग 18 लाख हेक्टेयर जमीन की सिंचाई होगी, जिनका

सभी को लाभ मिलेगा। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई जी के चरणों में नमन किया। श्री मलैया ने कहा उनके साथ रहकर छोटी-छोटी बातें सीखने का बहुत अवसर मिला। प्रदर्शनी का अवलोकन कर रहे किसान सत्यपाल पटेल ने कहा सुपर सीडर में कृषि अभियांत्रिकी की तरफ से 1 लाख 5 हजार का अनुदान मिला है, उससे स्वयं की बोनी भी की है और किराए पर भी चलाया है। उन्होंने कहा नई-नई मशीनों का किसानों को पता चलता है, तो उससे उत्पादन भी बढ़ेगा और भविष्य में किसानों को लाभ भी होगा। इसी प्रकार तेंदूखेड़ा के ग्राम बोरिया से आये बलवंत यादव ने कहा यहां पर मेला लगा हुआ है, यहां पर अनुदान पर कृषि यंत्र रखे हुए हैं जिन किसानों को यह यंत्र लेने हैं, उसके बारे में सभी कुछ बताया गया है। इसी प्रकार सीता नगर सरपंच नरोत्तम पटेल ने कहा मेले में बहुत सारे कृषि के यंत्र, जैविक दवाई, जैविक उत्पाद, सहित विभिन्न कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी लगाई गई हैं, जो आधुनिक खेती के लिए फायदेमंद है। इनका सिस्टमैटिक उपयोग करें तो किसान खेती को दोगुना कर सकता है। इसी प्रकार एग्रोदूत कंपनी के को-फाउंडर ने कहा एग्रोदूत एक एआई पर आधारित एक नई तकनीक हैं, जिससे किसानों को बुवाई से लेकर कटाई तक के सारे सॉल्यूशन एक प्लेटफार्म पर उपलब्ध हैं, किसान आम भाषा में सवाल पूछ कर अपनी भाषा में सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उन्होनें कहा यह सारे के सारे प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। इस अवसर पर हरिश्चंद्र गुड्डू पटेल, नर्मदा सिंह एकता, श्रीराम पटेल, उप संचालक कृषि जितेन्द्र सिंह राजपूत ने अपनी-अपनी बातें विस्तार से रखी। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, निजी कस्टम हायरिंग, पावर स्प्रेयर, मृदा हेल्थ कार्ड योजनांतर्गत नवीन निर्मित आवंटित प्रयोगशाला सहित अन्य किसानों को अतिथियों द्वारा हितलाभ वितरण किये गए।

हॉकी प्रतियोगिता में टीकमगढ़ के आलीशान का चयन

टीकमगढ़। जिला हॉकी संघ के सचिव सीनियर हॉकी कोच प्रिंस कुमार सेन ने जानकारी देते हुए बताया कि 68वीं राष्ट्रीय शालेय हॉकी प्रतियोगिता में टीकमगढ़ जिले के खिलाड़ी आलीशान खान पठान का चयन सब जूनियर नेशनल के लिए हुआ है जो की भोपाल मध्य प्रदेश में आयोजित होनी है। जिसमें 27 दिसम्बर से एक जनवरी 2025 तक तक प्री नेशनल कैंप रहेगा एवं 2 जनवरी 2025 से नेशनल टूर्नामेंट में खेलेगा वर्तमान में आलीशान खान खेलो इंडिया स्मॉल सेंटर में प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस अवसर पर जिला कलेक्टर अवधेश शर्मा, पुलिस अधीक्षक मनोहर मंडलोई अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीताराम सत्या, साई केंद्र प्रभारी देवेश चंदेल, प्रियंक खरे, प्रिंस परमार, कृतिका, चंद्र हॉकी कोच घनश्याम रावत, अब्दुल रियाज खान, प्रसन्न, नीरज प्रजापति ने खिलाड़ी को बधाई दी और उज्जवल भविष्य की कामना की।

टीकमगढ़ में जनप्रतिनिधियों व कलेक्टर ने अधिकारियों संग देखा शिलान्यास कार्यक्रम

टीकमगढ़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आज खजुराहो में केन-बेतवा नदी जोड़ो राष्ट्रीय परियोजना का शिलान्यास, ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सौर परियोजना का लोकार्पण एवं 1153 नवीन अटल ग्राम सेवा सदन का भूमिपूजन किया गया। इस अवसर पर टीकमगढ़ जिले के 13 अटल ग्राम सुशासन भवनों का भूमिपूजन हुआ। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़ में जिला स्तरीय किसान सम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान कलेक्टर अवधेश शर्मा, जनप्रतिनिधि, एसडीएम टीकमगढ़ संजय कुमार दुबे सहित संबंधित अधिकारी तथा किसान भाईयों द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मुख्यातिथ्य में खजुराहो में केन-बेतवा लिंक परियोजना के षिलान्यास कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा गया। केन बेतवा लिंक परियोजना के अंतर्गत टीकमगढ़ जिले में पलेरा, जतारा, लिधौरा तथा दिगौड़ा तहसील के 131 गांव के किसान लाभान्वित होंगे। इससे इस क्षेत्र में सिंचाई क्षमता बढ़ेगी जिसका लाभ किसान भाइयों को होगा। अच्छी सिंचाई होने से फसल उत्पादकता में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा जल स्तर में सुधार होगा और पेयजल की उपलब्धता होगी।

स्वैच्छिक रक्तदान द्वारा जीवन बचाने एकजुटता जरूरी

दमोह। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेई जी के 100 वे जन्म दिवस पर प्रशंसक जिले के वरिष्ठ पत्रकार अटल राजेन्द्र जैन द्वारा जिला चिकित्सालय में रक्तदान किया गया। अटल जी की जन्म जयंती पर रक्तदान को प्रेरित करते अटल राजेन्द्र जैन ने कहा कि रक्तदान करना एकजुटता का कार्य है। रक्तदान के प्रयास में सभी को शामिल होने का आह्वान किया। स्वैच्छिक रक्तदान द्वारा जीवन बचाने और एकजुटता बढ़ाने में निभाई जाने में भूमिकाओं की ओर ध्यान आकर्शित किया जा सके। इस अवसर पर रेडक्रॉस सोसायटी के प्रदेश

प्रतिनिधि कृष्ण कुमार परोहा, आल इंडिया जैन जर्नलिस्ट एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष समाजसेवी महेन्द्र जैन सोमखेड़ा, लघु व्यापारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष तनुज पाराशर, आर एम ओ डॉक्टर चौधरी, विनोद, अनुपम खरे, मनीष सागर, ब्रजेश अट्या की उपस्थिति रही। आज ही महामाया रक्तदान समिति के अध्यक्ष अखिलेश रजक ने भी 33 वी बार रक्तदान किया और सभी से रक्तदान करने की अपील की।

ग्रामीण महिलाओं ने लाड़ली बहना योजना चालू करने के लिए सौंपा ज्ञापन

चिचोली में किया प्रदर्शन, सीएम से वादों को पूरा करने का आग्रह

बैतूल। चिचोली ब्लॉक के ग्राम चुनाव हजूरी की 50 महिलाओं ने लाडली बहना योजना को पुनः चालू करने और फॉर्म भरने की प्रक्रिया शुरू करने की मांग करते हुए मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। इस अवसर पर आदिवासी कांग्रेस जिला अध्यक्ष रमेश काकोडिया, आदिवासी महिला कांग्रेस जिला अध्यक्ष पुष्पा पेंदराम, चिचोली ब्लॉक ग्रामीण अध्यक्ष नेकराम यादव और ग्रामीण महिला अध्यक्ष ने महिलाओं की मांगों का समर्थन किया। महिलाओं ने बताया कि विधानसभा चुनाव के दौरान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वादा किया था कि जिन बहनों के फॉर्म अब तक नहीं भरे गए हैं, उनके फॉर्म भरे जाएंगे। लेकिन एक वर्ष बीतने के बाद भी यह वादा पूरा नहीं हुआ है। महिलाओं का कहना है कि यदि एक महीने के भीतर लाडली बहन योजना के तहत फॉर्म भरने की प्रक्रिया शुरू नहीं हुई तो वे जिला मुख्यालय जाकर ज्ञापन सौंपेंगी और भूख हड़ताल पर बैठेंगी। महिलाओं ने अपनी मांगों को स्पष्ट करते हुए कहा कि

शिवराज सिंह चौहान ने चुनावी रैलियों में जो वादे किए थे, वे सभी अधूरे रह गए हैं। ज्ञापन देने वालों में कंचना बारस्कर, लक्ष्मी यादव, सुखमणी यादव, रेखा यादव, फूलवती यादव, सरोज राठौर, कांति वाघमारे, किरण वाघमारे, रामवती वरकडे, राधिका वरकडे, मुन्नी परते, मनौती धुर्वे, सुखिया धुर्वे, फुलवंता ऊईके, बसंती परते, बिसोंदी, कविता, गीता, श्याम, शारदा, सुखवंती, अंजीरा, सेवंती, नरबदी, शीतल, अनीता, कृष्णा, पिंकी, रीना, सरिता, ललिता, बसंती, और कमलती सहित अन्य महिलाएं शामिल थीं। महिलाओं ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी समस्याओं का समाधान जल्द नहीं हुआ, तो वे उग्र आंदोलन के लिए मजबूर होंगी।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने वरिष्ठ पत्रकार त्रिपाठी के निधन पर व्यक्त किया शोक

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सतना जिले के वरिष्ठ पत्रकार श्री विष्णुकांत त्रिपाठी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने दिवंगत आत्मा को श्री चरणों में स्थान देने और परिजनों को यह असीम दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

नाम परिवर्तन सूचना

मैं, अजय कुमार बोकिल, आयु 67 वर्ष निवासी ई 18, 45 बंगले, नॉर्थ टी.टी.नगर भोपाल, इसी नाम से जाना जाता रहा हूं। अब मैं अपना नाम आधार कार्ड के अनुसार परिवर्तित कर **अजय बोकिल** कर रहा हूं। जिसका उद्देश्य मेरे विभिन्न अनिवार्य दस्तावेजों जैसे कि पासपोर्ट आदि में नाम की एक समानता रहे। नाम में यह परिवर्तन मेरे द्वारा दि. 24/12/2024 को भोपाल में दिए गए शपथ पत्र के अनुसार है।

अजय बोकिल, भोपाल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व.अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती पर खजुराहो में उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

वीर बाल दिवस सप्ताह में विद्यार्थियों ने बनाये शहीदों के चित्र

डिजिटल प्रेजेन्टेशन और अन्य गतिविधियों का आयोजन

भोपाल (नप्र)। प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में 'वीर बाल दिवस' सप्ताह के मौके पर 26 दिसम्बर तक विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इस दौरान स्कूलों में विद्यार्थियों ने गुरू गोविंद सिंह जी के वीर पुत्रों साहिबजादा जोरावर सिंह और फतेह सिंह की शहादत पर चित्र बनाए। प्रदेश के अनेक स्कूलों में 'मेरे सपनों का भारत', मुझे किससे खुशी होती है, राष्ट्र निर्माण में बच्चों की भूमिका और विकसित भारत के लिये मेरा दृष्टिकोण विषय पर चित्रकला, निबंध लेखन, कविता और डिजिटल प्रेजेन्टेशन के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये। अनेक स्कूलों में प्रार्थना सभा और विशेष सत्र आयोजित कर विद्यार्थियों की प्रेरणा के लिये प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्त बच्चों की प्रेरणादायी कहानी सुनाई गई। उल्लेखनीय है कि सिक्खों के 10वें गुरू गोविंद सिंह जी के वीर पुत्रों ने 26 दिसम्बर 1705 को 9 वर्ष और 6 वर्ष की अल्पायु में अपने प्राणों की आहुति दी थी। इन दोनों महान बाल वीरों को श्रद्धाजंलि देने के लिये स्कूलों में यह आयोजन किये गये। इस संबंध में स्कूल शिक्षा विभाग ने जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश जारी किये थे।

नव नियुक्त उपाध्यक्ष श्रीनिवास राव ने कार्यभार ग्रहण किया

भोपाल (नप्र)। श्रीयुक्त श्रीनिवास राव ने भोपाल में मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल कार्यालय पहुंचकर उपाध्यक्ष का पदभार गृहण किया। मूलतः अकादमिक पृष्ठभूमि से आने वाले श्री राव सदैव शैक्षणिक दायित्वों से जुड़े रहे हैं। उन्होंने पिछले 20 वर्षों में अपने अध्यापन कार्य से अनेक विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में सफलता अर्जित करने में मार्गदर्शन दिया है। कार्यभार गृहण करने के बाद श्रीयुक्त श्रीनिवास राव ने कहा कि वे टीम भावना के साथ माध्यमिक शिक्षा मंडल में पारदर्शिता के साथ परीक्षा व्यवस्थाओं का संचालन सुनिश्चित करने में सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षण संस्थाओं में तनावरहित वातावरण प्रदान करने से विद्यार्थी परीक्षाओं में पूरी क्षमता के साथ शामिल हो सकेंगे। माध्यमिक शिक्षा मंडल के सचिव श्री के.डी. त्रिपाठी ने मंडल की गतिविधियों की जानकारी दी।

भोपाल में स्कूली छात्रा से बैड टच

पीछा करके हाथ पकड़ा; आरोपी की तलाश में जुटी पुलिस

भोपाल (नप्र)। स्कूली छात्रा जब भी घर से बाहर निकलती थी तो मोहल्ले का एक युवक उसका पीछा करने लगता। मंगलवार युवक ने बुरी नीयत से उसका हाथ भी पकड़ लिया। परेशान होकर छात्रा ने पूरी बात परिजनों को बताई तब थाने जाकर शिकायत की है। गांधी नगर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि 15 वर्षीय किशोरी गांधी नगर इलाके में रहती है तथा नौवीं कक्षा की छात्रा है। इलाके में ही रहने वाला फिरोज नाम का युवक छात्रा को पिछले कई दिनों से परेशान कर रहा था। छात्रा जब भी स्कूल के लिए निकलती तो वह पीछा करने लगता था। मंगलवार को जब उसने बुरी नीयत से छात्रा का हाथ पकड़कर उसके साथ छेड़खानी की। छात्रा ने घर जाकर परिजनों को पूरी बात बताई तथा थाने में जाकर शिकायत कर दी। जिस पर पुलिस ने छेड़छाड़ सहित पॉक्सो एक्ट की धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है, फिलहाल आरोपी की गिरफ्तारी नहीं जा सकी है।

पीएम मोदी के कार्यक्रम के बाद दिखी अव्यवस्था

हाईवे में लगा कई किमी लंबा जाम, 2000 गाड़ियां फंसी

छतरपुर (नप्र)। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 दिसंबर को केन-बेतवा लिंक परियोजना का उद्घाटन किया। इस उद्घाटन कार्यक्रम में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए थे। कार्यक्रम खत्म होने के बाद नेशनल हाईवे पर कई किलोमीटर का लंबा जाम लग गया। इसमें हजारों की संख्या में आने वाले वाहन जाम में फंस गए। यह जाम दोपहर 1:00 से लगा हुआ था जो कि शाम 4:00 बजे के बाद खुल सका। जाम की खबर लगते ही मौके पर पुलिस ने मोर्चा संभाला और धीरे-धीरे करके जाम को खुलवाने की कोशिश करने में लग गई। यह जाम फोर लाइन की दोनों तरफ लगा हुआ था जिसमें सैकड़ो की संख्या में बसें और अन्य वाहन शामिल थे।

हाइवे में 3 घंटे तक लगा रहा जामः टीकमगढ़ जिले से मोदी के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आए एक युवक ने बताया कि वह मोदी के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आया था। दोपहर 1:00 बजे से जाम में फंसा हुआ है लिहाजापुरी बस के लोग जमीन पर बैठकर आराम कर रहे हैं। पुलिस ने लगभग 2 से 3 घंटे की मशक्कत करने के बाद जाम खुलवा दिया इसके बाद आवागमन संभव हो सका।

हाईवे में क्यों लगा जामः मिली जानकारी के अनुसार खजुराहो में पीएम मोदी केन-बेतवा नदी लिंक परियोजना का भूमिपूजन करने के लिए आए थे। इसके अलावा उनकी सभा थी। इसमें भीड़ को इकट्ठा करने के लिए सैकड़ों बसों की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम समाप्ति के बाद वापसी के लिए हाईवे से गुजरने के चलते कई किमी लंबा जाम लग गया।

कैबिनेट ने दी मंजूरी, सरकार तैयारी में जुटी

स्वास्थ्य विभाग में 46,491 नए पदों पर की जाएगी भर्ती

भोपाल (नप्र)। मप्र में स्वास्थ्य सुविधाओं में सबसे बड़ी परेशानी स्टॉफ की कमी है। अस्पतालों में स्टॉफ की कमी पूरी करने के लिए मध्यप्रदेश सरकार तैयारियों में जुट गई है। इसी क्रम में कैबिनेट ने स्वास्थ्य सुविधाओं को सशक्त करने के लिए संशोधित मानव संसाधन मानदंडों (आईपीएचएस) को मंजूरी दी है, जिसमें राज्य स्तरीय मानक अनुसार स्वास्थ्य संस्थाओं में 46491 नवीन पदों (नियमित, संविदा, आउटसोर्स) के सृजन की स्वीकृति दी गयी है। इनमें 27 हज़ार 838 पदों की पूर्ति एनएचएम अंतर्गत तथा शेष 18 हज़ार 653 पदों की पूर्ति स्वास्थ्य विभाग द्वारा आगामी दो

वित्तीय वर्षों में की जाएगी। यह जानकारी डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने स्वास्थ्य संस्थानों और चिकित्सा सेवाओं की स्थिति की समीक्षा के दौरान दी। उन्होंने आईपीएचएस मानकों के अनुरूप नए पदों पर भर्ती प्रक्रिया को निर्धारित समयसीमा में पूर्ण करने का निर्देश दिया है, ताकि स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी व सुलभ बनाया जा सके। इसके साथ ही उन्होंने नवीन जिला चिकित्सालयों में रिक्त पदों की पूर्ति और निर्माणाधीन कार्यों की सतत निगरानी करने की बात की है। बैठक में आयुक्त स्वास्थ्य, एमडी एमपीबीडीसी और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति रही।

सौरभ शर्मा के खिलाफ लुक आउट सर्कुलर जारी

कार से मिले गोल्ड-कैश जब्ती के बाद ऐक्शन बिना पूछताछ देश के बाहर नहीं जा सकेगा

भोपाल (नप्र)। आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा को लेकर लुक आउट सर्कुलर जारी किया गया है। भोपाल के मेंडोरी में इनोवा कार से 52 किलो सोना और 11 करोड़ रुपए कैश जब्त करने के बाद सौरभ शर्मा से पूछताछ की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। लुक आउट सर्कुलर जारी होने के बाद सौरभ शर्मा अब भारत आने पर सीधे जांच एजेंसियों के शिकंजे में आ सकेगा। साथ ही बिना विभाग की परमिशन के देश से बाहर भी नहीं जा सकेगा। कार से मिला सोना और कैश आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा का ही होने की पुष्टि के बाद आयकर विभाग ने दो दिन पहले लुक आउट सर्कुलर जारी करने का फैसला लिया था। इसके लिए डीआरआई को पत्र भेजने की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी थी। दो दिनों में आयकर अधिकारियों ने यह प्रक्रिया पूरी की और अब सौरभ शर्मा से पूछताछ संबंधी कार्रवाई के लिए लुक आउट सर्कुलर जारी कर दिया गया है।

दुबई में है सौरभ शर्मा, आधिकारिक जानकारी नहीं

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सौरभ शर्मा उसके ठिकानों पर लोकायुक्त की छापेमारी के पहले से दुबई में है। हालांकि इसकी कोई आधिकारी जानकारी आयकर विभाग या अन्य जांच एजेंसियों के पास नहीं है। इसलिए सौरभ शर्मा के खिलाफ लुक आउट सर्कुलर जारी किया गया है। सौरभ शर्मा अब लोकायुक्त पुलिस और आयकर विभाग दोनों के जांच के दायरे में आ गया है, दोनों एजेंसियों को उसकी तलाश है।

टर्नओवर 50 करोड़ से कम, टैक्स चोरी 500 करोड़ की, आयकर छापेमारी में खुलासा

भोपाल में 18 दिसंबर को तीन बिल्डरों और उनके सहयोगियों के यहां हुई आयकर विभाग की छापेमारी में बड़ा खुलासा हुआ है। त्रिशूल कंस्ट्रक्शन के राजेश शर्मा और छापे के जद में आए बिल्डरों के मामले में सामने आया है कि इनकी कंपनियों का सालाना टर्नओवर 50 करोड़ रुपए से कम है, लेकिन उन्होंने 500 करोड़ रुपए से अधिक की टैक्स चोरी की है। इधर, रायपुर (छत्तीसगढ़) के कारोबारी महेंद्र गोयनका का इन्वॉल्वमेंट उजागर हुआ है। गोयनका के मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के आईएएस अधिकारियों के साथ संबंधों का भी खुलासा हुआ है। आयकर विभाग को छापेमारी के दौरान ग्वालियर में पदस्थ एक आईएएस अधिकारी से महेंद्र गोयनका के करीबी रिश्तों के सबूत मिले हैं। विभाग को आशंका है कि भोपाल में जमीन की खरीद-फरोख्त में यह अधिकारी कारोबारी की मदद करता रहा है। इसलिए उसकी भूमिका की जांच की जाएगी ।

शरद जायसवाल और अन्य करीबियों को भी नोटिस जारी होंगे

आयकर विभाग ने गोल्ड और कैश जब्त किए जाने के बाद कार के मालिक चेतन सिंह गौर से पूछताछ की है। गौर के बयान के बाद अब सौरभ शर्मा और उसके सहयोगी शरद जायसवाल को नोटिस जारी करने की तैयारी है। इसके साथ ही सौरभ की मां, पत्नी और अन्य परिजनों को राजधानी के चूना भट्टी स्थित रेस्टोरेंट 'फोगीट' से संबंधित मामले में नोटिस जारी किए जाएंगे। सौरभ शर्मा के करीबी रिश्तेदार अपने सोशल मीडिया अकाउंट डिलीट कर भूमिगत हो गए हैं।

भोपाल में बैंक खाते बेचने वालों का पर्दाफाश

3 महीने में सिर्फ दो खातों में ठगी के 5 करोड़ का लेनदेन

भोपाल (नप्र)। कोलार पुलिस ने साइबर ठगों को बैंक खाते बेचने वाले एक गिरोह का पर्दाफाश करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी 20-20 हजार रुपये में अपने बैंक खाते साइबर ठगों को बेचते थे। इस गिरोह ने शहर के दस से अधिक बैंकों में खातें खुलवाए थे। पुलिस ने इस मामले में दो खातों की जानकारी प्राप्त की है, जिनमें तीन महीने के दौरान करीब साढ़े पांच करोड़ रुपये का लेन-देन हुआ है।

गिरोह का खुलासा कैसे हुआः पुलिस को पहले कोलार स्थित एक बैंक में संदिग्ध लेन-देन की जानकारी मिली, जिसके बाद बैंक प्रबंधन ने पुलिस को सूचना दी। बैंक खाता बंद करने के प्रयास में जुटे राहुल श्रीवास्तव ने पुलिस से पूछताछ में पूरे गिरोह के बारे में खुलासा किया। राहुल ने बताया कि उसने अपने और पत्नी के नाम से बैंक खाते खुलवाए थे, जिन्हें 40 हजार रुपये में घनश्याम सिंगरोले नामक व्यक्ति को बेचा था। उसके बाद इस गिरोह का काम बढ़ता गया। नितीश शुक्ला, निकिता प्रजापति जैसे अन्य आरोपियों ने भी बैंक खाता बेचने का काम शुरू किया। पुलिस की जांच में पता चला कि आरोपियों ने बैंक खातों का इस्तेमाल साइबर ठगी के लिए किया था। इन खातों से साइबर ठगों को भारी मात्रा में पैसा भेजा गया। विशेष रूप से राहुल श्रीवास्तव के नाम से एक बैंक खाता था, जिसमें तीन महीने के दौरान लगभग तीन करोड़ रुपये का लेन-देन हुआ था। पुलिस ने इसके बाद अन्य खातों की जांच की और पाया कि इन खातों का उपयोग साइबर ठगी के लिए हुआ था।

राहुल की पत्नी के खाते से हुआ लेन-देनः राहुल ने पत्नी प्रीति के नाम से भी एक बैंक खाता खुलवाया था, जिसे घनश्याम और नितीश ने धोखाधड़ी के लिए इस्तेमाल किया। उन्होंने राहुल के खातों से लोन लिया और सीसीएलएडी खाते भी खुलवाए। उन्होंने प्रीति के नाम पर एक फर्जी दुकान भी खुलवाई और उस दुकान के नाम से भी एक बैंक खाता खुलवाया था। इन खातों का उपयोग साइबर ठगी के पैसों के लेन-देन में हुआ। राहुल को इन घटनाओं के बारे में तब पता चला, जब पुलिस ने इस मामले की जांच शुरू की।

नितीश के खाते से हुई बड़ी-बड़ी वारदातेंः पुलिस की जांच में नितीश शुक्ला के बैंक खाते पर देशभर के 86 थानों से होल्ड लगे होने की जानकारी सामने आई है। इसका मतलब है कि नितीश का खाता साइबर ठगी की कई बड़ी वारदातों में शामिल रहा है।

पति को मृत घोषित कर दूसरी शादी

कोर्ट से खिलवाड़ करने का दांव पड़ा उल्टा, महिला को 4 साल की जेल

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में एक महिला को अपने पति को मृत घोषित करके दूसरी शादी करने के जुर्म में 4 साल की जेल और 8 हजार रुपये का जुर्माना हुआ है। महिला ने रिटायर्ड सूबेदार की जायदाद और पेंशन के लालच में ऐसा किया। उसने फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाकर सूबेदार से शादी कर ली। पति की शिकायत पर पुलिस ने महिला और सूबेदार दोनों को गिरफ्तार किया। कोर्ट ने महिला के कृत्य को गंभीर मानते हुए सज़ा सुनाई।

यह मामला ग्वालियर के हजीरा थाने का है। रईस नाम के एक व्यक्ति ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई कि उसकी पत्नी रानी बेगम ने उसे जिंदा रहते हुए ही मृत घोषित कर दिया है। रानी ने

इसके लिए नगर निगम से फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र भी बनवा लिया था। रईस ने यह भी बताया कि रानी ने नौबत सिंह नाम के एक रिटायर्ड सूबेदार से शादी कर ली है। नौबत सिंह के पास अच्छी जायदाद और पेंशन है। रईस का आरोप था कि उसकी पत्नी ने पैसे और संपत्ति के लालच में यह सब किया है।

देशभर से आए 5 हजार किन्नरों ने निकाली शोभायात्रा

- लाखों की ज्वेलरी पहन बग्घी पर हुए सवार

खंडवा (नप्र)। खंडवा जिले के हरसूद में बुधवार को आयोजित अखिल भारतीय किन्नर महासम्मेलन के दौरान किन्नर समुदाय ने एक भव्य शोभायात्रा निकाली। इस शोभायात्रा में करीब 5 हजार किन्नर और अन्य लोग शामिल हुए। यात्रा का आयोजन 22 से 30 दिसंबर तक चल रहे महासम्मेलन के हिस्से के रूप में हुआ, जिसमें देशभर से किन्नर समुदाय के लोग सम्मिलित हो रहे हैं। शोभायात्रा के दौरान बैंड-बाजे, बग्घियों और कलश धारण कर किन्नरों ने अपनी पारंपरिक धारा का प्रदर्शन किया।

शोभायात्रा का भव्य आयोजनः शोभायात्रा का मार्ग 5 किलोमीटर लंबा

था और इस यात्रा में 3 घंटे से अधिक समय लगा। किन्नर गुरू पारंपरिक वेशभूषा में सजे-धजे थे और लाखों रुपये के गहनों से अलंकृत थे। इस यात्रा में कुल 5 बग्घियों में किन्नर गुरू सवार थे, जो लोगों पर आशीर्वाद बरसा रहे थे। सुरक्षा के लिहाज से सशस्त्र निजी सुरक्षा गार्ड भी शोभायात्रा में शामिल थे, जिससे कोई भी अप्रिय घटना न हो।

जनता ने लिया आशीर्वादः हरसूद में यात्रा के दौरान 10 से अधिक स्थानों पर लोगों ने फूलों की बारिश की और किन्नर समुदाय का स्वागत किया। इसके साथ ही तुलादान भी किया।

कूनो से निकला चीता शहर की सड़कों पर दौड़ता दिखा

श्योपुर में कुत्ते का किया शिकार; तीन दिन से जंगल से बाहर घूम रहा

श्योपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के कूनो नेशनल पार्क के जंगल से निकला चीता वायु श्योपुर शहर में घुस गया। उसका शहर की सड़कों पर दौड़ लगाते वीडियो सामने आया है। चीता ने एक कुत्ते का शिकार भी किया है। ये वीडियो मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात का बताया जा रहा है। चीता वायु शहर के वीर सावरकर स्टेडियम के पास देखा गया। बुधवार को सुबह उसकी लोकेशन बेला भीमलत गांव के पास सामने आई है। कूनो नेशनल पार्क की चीता ट्रैकिंग टीम इस चीते को ट्रैक कर रही है। चीता स्टेडियम, कलेक्ट्रेट और ईको सेंटर होते हुए बावंदा नाले तक पहुंचा है। इस इलाके से सामान्य और कूनो वन मंडल का बफर जोन का जंगल लगा हुआ है। कयास लगाए जा रहे हैं कि चीता अब कूनो वापस लौट जाएगा। मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात चीता श्योपुर शहर की सड़कों पर दौड़ता नजर आया।

चीता को देखने वाले इन लोगों ने ये कहा - शहर के वीर सावरकर स्टेडियम के पास क्रेशर बस्ती में रहने वाले युसूफ खान ने बताया कि चीता स्टेडियम में था। दो गाड़ियां भी कुछ दूरी पर थी। हमने वीडियो बनाया तो दो वर्दीधारी लोगों ने मोबाइल

लेकर वीडियो डिलीट कर दिया। दहशत की वजह से शहर के वीर सावरकर स्टेडियम में रहने वाले कर्मचारी भी अपने आवास पर ताला लगाकर कहीं चले गए हैं। लोगों में भी डर का माहौल है। क्रेशर कॉलोनी निवासी महिला तमन्ना खान का कहना है कि रात में चीता स्टेडियम के पास आ गया था, हमारी बस्ती के पास मोर डूंगरी नदी है और पास में जंगल है। पूरी बस्ती के लोग डरे हुए हैं। कलारना गांव निवासी गिर्राज आदिवासी का कहना है कि चीता ने कुतिया का शिकार किया है। हमने कुतिया के चिल्लाने की आवाज सुनी थी। फिर हमने घर के अंदर खिड़की से देखा तो चीता उसे खींचकर ले जा रहा था।

दोनों चीते साथ रहते थे, पहली बार अलग हुएः कूनो नेशनल पार्क के खुले जंगल में अग्नि और वायु नाम के दो चीतों को कूनो वन मंडल के अधिकारियों ने छोड़ा था। यह दोनों चीते रिश्ते में सगे भाई हैं, जो हमेशा एक साथ रहते हैं, एक साथ शिकार करते हैं और मिल बांटकर उस शिकार को खाकर अपना पेट भरते हैं। पहली दफा यह दोनों अलग हुए हैं, दोनों अलग-अलग दिशा में कूनो के रिजर्व जोन से बाहर निकल गए है।

चीता पर ट्रैकिंग टीम रख रही नजरः जब भी कोई चीता कूनो नेशनल पार्क से निकलकर बाहर पहुंच जाता है तो उसकी निगरानी और देख रेख के लिए चीता ट्रैकिंग टीम रहती है, इस टीम में तीन-तीन लोगों की ड्यूटी लगाई जाती है। 24 घंटे के लिए तीन टीमें तैनात रहती हैं, प्रत्येक टीम की ड्यूटी 8 घंटे की होती है। टीम में डॉक्टर नहीं रहते, सिर्फ वनकर्मी होते हैं जो लगातार चीते की मॉनिटरिंग करते रहते हैं। जरूरत पड़ने पर चीते को ट्रेंकुलाइज भी किया जाता है। हालांकि इसके लिए बड़े अधिकारियों की परमिशन ली जाती है। चीता जहां भी रहता है अपना पेट भरने के लिए उसे खुद ही मशक्कत करनी रहती है, उसके खाने का इंतजाम वन विभाग नहीं करता बल्कि, वही किसी न किसी जानवर का शिकार करके अपना पेट भरता है।

इस बारे में कूनो नेशनल पार्क के डीएफओ आर थिरूकुराल का कहना है कि चीता कहां है उसकी लोकेशन के बारे में हम कोई जानकारी नहीं दे सकते। उसकी निगरानी के लिए हमारी टीमें तैनात है जो 24 घंटे उसे पर निगरानी रखते हैं। चीता जहां भी रहता है वह अपने हिसाब से अपने भोजन का इंतजाम कर लेता है।